''चँद्रानी पूत का पद्य''

(संभोग और असंभोग, 1–940)

रचयिता

डॉ. उमाशंकर पटैल

एम.एससी. पी.एच.डी. नेट बाय.एस.एफ.

2023

स्व–प्रकाशक

शोभा सिंह यादव, शासकीय महाविद्यालय, पाटन

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

भारत

(C) कापीराइट कवि के अधीन

प्रथम प्रकाशन : जनवरी 2023

प्रकाशकः कवि (रचयिता) स्व प्रकाशक – डॉ. उमाशंकर पटैल,

आत्मजा स्व.श्रीमति चॅंद्रानी पटैल,

आत्मज स्व. श्री गंगाराम पटैल मु.पो. सिहुँड़ी (बाकल)

जिला– कटनी म.प्र. भारत पिन कोड – 483330

Email: remfungi@gmail.com
patelbookssihundi@gmail.com

ISBN No: 978-93-5780-664-0
Website: www.chandrani.org

प्रस्तावना

बीसवीं शताब्दी का उत्तरार्ध तथा इक्कीसवीं शताब्दी भारतीय समाज और संस्कृति का संक्रमण काल है जिसमें हिन्दी व अँग्रेजी भाषा, भारतीय व विदेशी संस्कृति, संयुक्त व एकल परिवार, संस्कार व विकार, असमानता व समानता, प्रजातंत्र का सद्उपयोग व दुरूपयोग, पर्दाप्रथा व अपर्दाप्रथा, लड़का व लड़की संतान, सयाने व संताने, परंपरा व विकास, कट्टरता व उदारता, धर्मान्धता व विज्ञान आदि पहलुओं का अस्तित्व व प्रभाविता के लिये संघर्ष चल रहा है। विकास या उद्विकास परिवर्तन पर आधारित होता है। इसी प्रकार मानव समाज का विकास फिर विनाश होना सृष्टि में एक सत्त प्रक्रिया है। संयम समाज के विकास के लिये नितांत आवश्यक होता है। मानव समाज संयम के साथ संक्रमण काल को पार करके मानव कल्याण को ध्येय मानकर यह काव्य लिखा गया है जिसमें प्रत्येक पंक्ति में नौ शब्द तथा नौ सौ चालीस छंद हैं। इस प्रकार हिन्दुस्तान की वृहद व अनोखी कविताओं में से एक है। जिसका मुख्य ध्येय निःस्वार्थ भारतीय जनकल्याण है।

डॉ. उमाशंकर पटैल
(रचयिता/प्रकाशक)
13–01–2023

कवि का परिचय

डॉ. उमाशंकर पटैल आत्मजा स्वर्गीय श्रीमति चँद्रानी पटैल आत्मज स्वर्गीय श्री गंगाराम पटैल का जन्म सन् 1966 में मुकाम व पोस्ट सिहुँड़ी (बाकल) तहसील बहोरीबंद जिला कटनी मध्यप्रदेश भारत भूमि में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा गाँव से उच्चतर मध्यमिक शि़क्षा बाकल से, स्नातक (जीव विज्ञान) सिहोरा से, स्नातकोत्तर तथा विद्यावाचस्पिति (वनस्पति शास्त्र) की उपाधि जीव विज्ञान विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर (म.प्र) भारत से प्राप्त किया। मेरे पूर्वज स्व. रिखीराम उर्फ रेखाराम पटैल सूखा गाँव के मालगुजार व कोयला के ठेकेदार थे। मेरे दादाजी स्व. श्री काशीराम पटैल कृषक व छोटे साहूकार थे । पिताजी कृषक थे। मैंने गाँव के हिसाब से अमीरी व शहर के हिसाब से गरीबी का काफी अनुभव लिया।

मैंने सन् 1996 से 2002 तक एन.ई.एस. विज्ञान महाविघालय जबलपुर में,सन् 2002 से 2007 तक जीवविज्ञान विभाग रानी दुर्गावती विद्यालय जबलपुर में सन् 2008 – 2009 में शास़. महा. भुआ बिछिया मण्डला में, सन् 2009–10 में शास. एस. एस. महा.सिहोरा में तथा सन् 2011–12 में शास. महा. पवई पन्ना में अध्यापन कार्य किया। वर्तमान में शास. शोभा सिंह यादव महाविद्यालय पाटन जबलपुर में अतिथि विद्वान के रूप में अध्यापन कार्य कर रहा हूँ।

कवि ने विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किया है (1) कवक की दस नई जातियों की खोज (2) 0.5=1 के लिये वैज्ञानिक आधार (पटेल प्लान ऑफ डेसिमल क्लॉक) (3) ग्लोबल वार्मिग नियंत्रण के लिये पटेल्स थ्योरी आफ थर्टी थ्री, और (4) शोध कार्यों के मूल्याँकन के लिये पटेल हापोथेसिस आफ रिसर्च इवेल्यूएशन अमेंडेड जो कि वेवसाइट www.chandrani.org में और Googale सर्च में उपलब्ध हैं। अन्य रचनायें ''चँद्रानी पूत की नब्बै कवितायें'' उपर्युक्त वेवसाइट में उपलब्ध हैं।

प्रार्थना

इस काव्य रचना का उद्‌देश्य जनकल्याण है यदि किसी शब्द से किसी समुदाय को दुख पहुँचता है तो विद्वानों से विचार विमर्श करके आगामी संस्करण में उस शब्द को रुपान्तरित या निष्काषित कर दिया जायेगा

डॉ. उमाशंकर पटैल
13–01–2023

चँद्रानी पूत का पद्य

(संभोग और असंभोग, 1–940)

आधा भोगे नर आधा भोगे नारी तो संभोग कहलाये।

साहित्य में समभाग या समभोग संभोग का है पयार्य।। 1

नर का शुक्राणु मिलकर नारी का अण्डाक भ्रूण बनाये।

भ्रूण से विकसित होने पर जीव एक शिशु कहलाये।। 2

सम से जब विषम होवे तो असंभोग बन जाये।

जब अण्डाणु न दे नारी रास क्रीड़ा असंभोग कहलाये।। 3

बिन नारी सहमति भी रास क्रीड़ा असंभोग बन जाये।

अण्डाणु शुक्राणु से सयुंजन न करे भ्रूण न बनाये।। 4

ऐसी मेहनत शून्य धन शून्य बराबर शून्य हो जाये।

शून्य पाने के लिए जो मेहनत करे पागल कहलाये।। 5

नीच इंद्रियों से जो लगन लगाये वह नीच कहलाये।

असंभोग मनुष्य तन को जहन्नम की ओर ले जाये।। 6

नेक कर्म जो निरंतर करे वो स्वर्ग में जाये।

पृथ्वी की जरुरत पर फिर मानव बन आ जाये।। 7

खराब कर्म जो एकऊ करे तो जहन्नम में जाये।

जन्म मरण के बीच चौरासी योनि के चक्कर काटे।। 8

जन तन में मैला फिर भी मरने से घबराये।

मरत में चींटि से लेकर हाथी तक तड़प जाये।। 9

भूकम्प का नाम सुन मनुष्य महल छोड़ भाग जाये।

अपनी जान बचा कर भागे बाकी भाड़ में जाये।। 10

प्रेत योनि कितनी चले जा कोई न बता पाये।

एक दिन की भूख प्यास में आँत सिकुड़ जाये।। 11

दूसर दिन रीड़ की हड्डी आगे को झुक जाये।

तीसर दिन जन अहं छोड़ जाति–पाति भूल जाये।। 12

चौथे दिन की भूख प्यास में त्राहि त्राहि चिल्लाये।

संभोग समभाग संजोग से बना वह शुभ संतति आये।। 13

असंभोग का कानूनी दॉव पेंच अतिचार व बलात्कार आये।

त्याग से जो समाधिष्ट हो वो एक कला कहाये।। 14

संभोग में एक खुश दूसरा भी खुश समझा जाये।

असंभोग में सदा एक खुश लेकिन दूसरा आँसू बहाये।। 15

गणित की दृष्टि से संभोग सार्थक व पुण्य कहलाये।

अध्यात्म की दृष्टि से पुण्य का विलोम पाप आयें।। 16

अब आप विश्लेषण करें आप पुण्यात्मा या पापात्म आये।

विविधता प्रकृति का नियम विविधता में ही जीवन वितायें।। 17

देखे सुने विश्लेषण करे समझें फिर प्रतिक्रिया दें बताये।

असंभोग छोड़ संभोग उत्तई करियो जासे वंश चल पाये।। 18

सब विद्वानों जानों कभी कभी त्रिया भी असंभोग लगाये।

त्रिया चरित्रं को कम न आँकियों उमाशंकर दे समझाये।। 19

असंभोग एक पाप कर्म जगत में सब करत आयें।

संभोग जो करत मानुष इस धरा पर इंसान आयें।। 20

एक दिन गहरे समुंदर में आप लो जरूर नहाये।

तो आपको भवसागर कैसा है समझ में आ जाये।। 21

कोहरा चारों ओर ऐसा दिखे आप दिशा भूल जायें।

आवन चाहें किनारे को किन्तु बीच समुद्र ओर जायें।। 22

ये छोटा सा तजुर्बा आहे जो आपको दिया बताये।

बात ब्रह्मण्ड की करें जिसे दूरदर्शी नहीं देख पाये।। 23
बिना अनुभव आदमी तो सामान्य जंगल में भूल जाये।
भूल भुलयै में भूलकर मानुष मानव नहीं बन पायें।। 24
स्वर्ग का रास्ता आसान होता तो सब चले जायें।
अपनी दम पर मनुष्य ऊपर ज्यादा नहीं जा पायें।। 25
अच्छी उछल कूद करे तो पाँच फीट तक जाये।
मशीन का सहारा ले तो मंगल तक पहुँच जाये।। 26
मशीन बिगड़े तो अघर में लटके या घरा आये।
धरा आत आत तक प्राण पखेरू बीचहिं उड़ जाये।। 27
चाँद मंगल तक मशीन की मदद से पहुँच गये।
लेकिन आज तक स्वर्ग का पता नहीं लगा पाये।। 28
स्वर्ग ऊपर है संत मुनि ज्ञानि सब दिये बतलाये।
स्वर्ग को रास्ता कहाँ से जाता कोई नहीं बताये।। 29
कितने ऊपर स्वर्ग है आज तक नहीं जान पाये।
जो स्वर्ग चला जाता तो लौटकर वह नहीं आये।। 30
स्वर्ग है जरूर हिंदू मस्लिम बौद्ध इसाई दियो बताये।
राम रावण युद्ध में इंद्र ने पुष्पक दियो भिजवाये।। 31
हिंदू धर्म में स्वर्ग का राजा देवराज इंद्र कहलाये।
असुरों ने इंद्र को स्वर्ग से बहुत बार भगाये।। 32
स्वर्ग वही पहुँचें जिसे लेने स्वर्ग से फरिस्ता आये।
प्रेतों के राज्य से शायद स्वर्ग का रास्ता जाये।। 33
ज्यादातर पंथिओं का हाल एक त्रिशंकु के सम होय।
नाहीं वापस आ सकें ना आगे को जा पाये।। 34
प्रेत प्रेतनी धेरकर सब अपनी जमात में लें मिलाये।
प्रेत योनि की आत्मायें भी अपना बहुमत लेत बढ़ाते।। 35
प्रेत राज्य पार करत में इंद्र देव करत सहाये।
चलना खुद को पड़त है इष्ट पीठ नहीं बैठाये।। 36
चलत समय पुण्य ऊर्जा के रूप में काम आये।

कम ऊर्जा वाली आत्मा प्रेत राज्य नहीं नक पाये।। 37

प्रेत योनि भी एक तरह की नर्क योनि कहलाये।

दण्ड के रूप में उनका भोजन दुर्गंध भोजन आये।। 38

प्रेत राज्य भी एक तरह का अंतर राज्य कहलायें।

एक ओर मानव योनि दूसरी ओर स्वर्ग राज्य आयें।। 39

मानव राज्य दानव राज्य स्वर्ग राज्य मुख्य राज्य आयें।

तीनों राज्य में मात्र मानव योनि सुधार योनि कहलाये।। 40

देव राज्य में पुण्य जोड़ना प्रकृति का स्वभाव आये।

दैत्य राज्य में पाप करना प्रकृति का स्वभाव आये।। 41

मानव राज्य में पाप पूण्य कर्म दोनों आ जायें।

मनुष्य कुछ पाप करे कुछ पुण्य आत्मा साथ जाये।। 42

इसको ऐसे समझें कोई पूरी उम्र प्रोन्नति नहीं पाये।

जिस पद से नौकरी शुरू करे वहीं रह जाये ।। 43

अवनत्ति कुकर्म का प्रतीक है कद में कलंक लगाये।

उन्नति सत्कर्म का फल है उच्च पद में बैठाये।। 44

सत्कर्म मार्ग कठिन है कदाचित रूह तक कँप जाये।

निष्कर्म राह सरल है कदापि उन्नति नहीं हो पाये।। 45

दुष्कर्म का पथ विकृत सदा कलंक और संकट लाये।

असंभोग की उपज ही ऐसी होवे जा दुष्कर्म कराये।। 46

संभोग की उपज सदा उत्तम होवे व सत्कर्म कराये।

सत्कर्म नाम ही ऐसा है जो वंश को चमकाये।। 47

सत्कर्म का प्रभाव ऐसा होता है कि नाम महकाये।

महक जहाँ तक जाये अमन का महौल दे बनाये।। 48

अमन का माहौल जहाँ तक जाये सुख मुख बताये।

सुख मुख वाला ऐसा दिखे जैसे स्वर्ग में आये।। 49

स्वर्ग धरती पर नहीं होता धरा स्वर्ग सम होये।

ऐसा समाज जहाँ न भूखा कोई ना कोई रोये।। 50

मुमकिन है कुछ काल के लिए ऐसा समाज बनायें।

लेकिन असंभोग की उपज ज्यों पेट भर खायें गर्रायें।। 51

स्थायित्व के लिए जरूरी है संभोग को सदा अपनायें।

नारी को प्राण सम मानकर उसका सहयोग भी पायें।। 52

सलाम वालेकम करने से आप भी वालेकम सलाम पायें।

वैसे नारी को महत्व देकर आप भी महत्व पाये।। 53

सम भावना होवे जहाँ वहाँ अशांति कभी ने आये।

सम भावना ही रास क्रीड़ा को संभोग दे बनाये।। 54

संतुलन बने नर नारी में जब सम भावना होये।

खुशी में दोनों हँसते दुख में दोनों साथ रोये।। 55

सम भावना होगी इंसानों में जब संभोग से आयें।

असंभोग से जन्मी हुई संतानें सदा विषम भाव पाये।।56

लोग दोष दें ग्रह नक्षत्रों को और पूजा करायें।

मूल समस्या है असंभोग की उस पर ना जायें।। 57

ग्रह नक्षत्र चक्कर काटें वे घूमकर फिर आ जायें।

बारह राशि नौ ग्रह फिर भी कोटि जन सतायें।। 58

नौ ग्रह बारह राशि पर व्याप्त समझ न आये।

कभी शनि कभी राहू कभी केतू दोष हो जाये।। 59

जन्म समय नहीं मालूम तो चालू नाम काम चलाये।

जन्म के पहले के संस्कार पर कोई नहीं जाये।। 60

जस खेत की जुताई होत तस उससे अंकुरण आयें।

खेत की बतर फसल पर अपना पूरा प्रभाव दिखायें।। 61

खाद पानी का फसल पर असर अनपढ़ भी बताये।

संतति को वातावरण का प्रभाव भी अच्छा खराब बनाये।। 62

संस्कार का महत्व सभी लोग समझ ही नहीं पाये।

उच्च शिक्षित परिवार की संतान भी नालायक हो जाये।। 63

संभोग असंभोग संस्कार का ज्ञान समझाने से आ जाये।

महत्व समझे तीनों का तो मानव समाज बदल जाये।। 64

समाज में असंभोग का प्रतिस्थापन संभोग से हो जाये।

तो प्रकृति के नियम से चलने वाली संतति आये।। 65
संभोग से उपजी पीढ़ी को जरूर प्रकृति मोह होये।

संभोग पीढ़ी समाज से सभी प्रदूषणों को दे भगाये।। 66
संभोग पीढ़ी पर्यावरण में कर सकती है प्राकृतिक सुधार।
क्योंकि उपज में उसके संयोग हुआ है संभोग आधार।। 67
संतुलित उत्पति है जिसकी सम है उसका बीज आधार।
सम हो जिसका जीव आधार सम्य हो उसका व्यवहार।। 68
सम हो जिसका व्यवहार वह उन्नति का ठोस आधार।
उन्नति का हो ठोस आधार तो लाये खुशियाँ अपार।। 69
जब खुशियाँ बँटे हजार तो महफिल हो जाए गुलजार।। 70
स्वर्ग की मनुष्य कामना करे जहाँ आत्मा रहे गुलजार।
आत्मा रहे गुलजार जाके लिऐ मनुष्य करे जतन हजार।। 71
मनुष्य की अंतिम इच्छा जन्नत में जगह बनाने की।
स्वर्ग पाने के लिए मनुष्य छोड़े खुशियाँ जमाने की।। 72
प्रत्यक्ष को छोडकर् अप्रत्यक्ष को चाहे कैसा मन है।
शायद स्वर्ग में स्थायित्व यहाँ कुछ दिन जीवन है।। 73
स्वर्ग संसार मनुष्य को विष्टा से मुक्ति मिलती है।
संसारिक बंधनो से कर्त्यव्य के कारण मुक्ति मिलती है।। 74
संभोग की संतान को प्रभु की भक्ति मिलती है।
परमात्मा की भक्ति से मन को शक्ति मिलती है।। 75
मन की शक्ति से परमेश्वर की भक्ती मिलती है।
मन की मुक्ति से निर्णय की शक्ति मिलती है।। 76
उचित निर्णय से मनुष्य को सही राह मिलती है।
सही राह मिलने से काम की चाहत मिलती है।। 77
चाहत पर मन में समर्पण की भावना पलती है।
काम के लिए समर्पण होने पर सफलता मिलती है।। 78
सफलता से मन को खुशी व शाँति मिलती है।
शाँति से सदैव लक्ष्मी की बात होती रहती है।। 79

लक्ष्मी जहाँ आती है वहाँ समृद्धि होती रहती है।
समृद्ध का मतलब धन में वृद्धि होती रहती है।। 80
धन से धर्मकाम की कामना सदा पूरी होती है।
धर्म के काम करने से आत्मा बलवती होती है।। 81
आत्मा बलवती होने से मन की शक्ति बढ़ती है।
मानसिक शक्ति बढ़ने से प्रभु की भक्ति बढ़ती है।। 82
भक्ति सेवा और प्यार तीन मार्ग जन्नत को जायें।
तीन में से जिसको जो मार्ग अच्छा लगे अपनायें।। 83
भक्ति मतलब भक्त भगवान में पूर्णरूप से मिल जाये।
भक्त का भगवान में पूर्ण मिलना योग क्रिया कहलाये।। 84
भक्ति तभी होती जब मानुष मन में प्यार आये।
मन में प्रेम भावना से आकर्षण भी आ जाये।। 85
योग का मतलब ही होता है कि जुड़ जाये।
भगवान भक्त यूँ जुड़े कि अंतर ना रह पाये।। 86
भगवान समान मनुष्य सुख दुख से परे हो जायें।
स्वर्ग समान संसार सुख दुख से परे हो जायें।। 87
जस माता अपने लड़के को भगवान भक्त को उठायें।
भक्त के दुख दूर करें और स्वर्ग भी पहुँचायें।। 88
संसारिक सुख मनुष्य की भक्ति में बाधक हो जायें।
सुख भोगने वाले कभी भी साधक नहीं हो पाये।। 89
स्वर्ग के अन्य रास्ते बिन त्याग आगे नहीं जाये।
त्याग ऊपर जाने के लिए सबसे कठिन साधन आये।। 90
जितना ज्यादा त्याग करें उतने देर तक स्वर्ग पाये।
कुछ लोगों की दृष्टि में त्याग हठ मार्ग कहलाये।। 91
प्रत्येक प्राणी जीव में आत्मा का वास होत आये।
आत्मा की सेवा परमात्मा की सेवा ही समझी जाये।। 92
आत्मा परमात्मा का अंश युगों से ऋषि हमें बताये।
आत्मा परमात्मा के सतत संबंध में सदा रही आये।। 92 ए

गंगा किनारे बस जाऊँ अगर पाप मिटे गंगा नहाये।
सारे तीरथ घर बनाऊँ अगर पाप घटें तीरथ जाये।। 93
चँदन लेप शरीर करूँ अगर पाप मिटे चँदन लगाये।
आँखो में रखूँ अगर पाप छिने नर्मदा दर्शन पाये।। 94
काम छोड़ भजन करूँ अगर पाप घटे भजन गाये।
अपना पूरा शरीर दूँ अगर पाप कमें दान दाये।। 95
पाप अलग है पुण्य अलग है अलग लिखा जाये।
पाप भोग अलग पाये पुण्य का भोग अलग पाये।। 96
शतप्रतिशत सहमति नर नारी की तो सहवास संभोग कहाये।
निनानवे प्रतिशत तक की मंजूरी असंभोग पाप बन जाये।। 97
चर अचर में व्यापत है परमात्मा कहाँ ढूँढ़न जायें।
प्राणी अंश है परमात्मा का उसमें दर्शन लो पाये।। 98
पीड़ा से तड़पते चींटी हाथी अगर कुछ चुभ जाये।
पीड़ा सब प्राणिन की समझो जैसे अपनी पीड़ा आये।। 99
छल कपट ईश्वर चाहे नहीं चाहे मन निर्मल भाये।
छल कपट ओई करत जो असंभोग की उपज आये।। 100
निर्मल मन निर्मल काया निर्मल माया हरि को सुहाये।
अमन क्षणभर नहीं रहे कभी काया कपटी मन समाये।। 101
संभोग प्रकृति का वरदान है और असंभोग शाप कहलाये।
शवासन आराम संभोग व असंभोग की कामना तुरंत मिटाये।। 102
समाज की सततता के लिऐ संभोग एक पुण्य कहलाये।
एक संतान पाले तो एक ब्रह्मयज्ञ समान हो जाये।। 103
सुर असुर दोनों यज्ञ करते अभिलाषा में अंतर आये।
सुर अपनी संतति को इंसान बनाये असुर शैतान बनाये।। 104
ईशा मसीह सुनाये संभव हाथी सुई छेद से जाये।
परन्तु धनवान कभी भी स्वर्ग में नाहीं पहुँच पाये।। 105
सनातन ब्राह्मण चतुर सुजान पाँच घर माँग के खाये।
संतान का लोक परलोग दोनों बने अहम भी जाये।। 106

ब्राह्मण मानव रूप में देवता कहते त्याग का पर्याय।
मान अपमान याद रखे मन कभी भूल ना पाये।। 107
जैन मुनि निज अपमान को उत्तम क्षमा दें सिखाये।
नेता को माला ना पहनाये तो काम बिगड़ जाये।। 108
काम से फुर्सत नहीं बच्चा को इंसान कौन बनायें।
पशु पक्षी भी अपने बच्चों को कुछ शिष्टाचार सिखायें।। 109
पढ़ेलिखे लोगन के पास भी समय नहीं रहत आये।
तो काहे ना भारतीय संस्कृति पतन की ओर जाये।। 110
सदियों से संभाला अपने बुजुर्गो ने उसे कौन बचाये।
हर पुरानी चीज खराब और नई अच्छी नहीं आये।। 111
समाज में जो दिख रहा असंभोग का असर आये।
संसकारी समाज के लिए सदा संभोग की जरूरत आये।। 112
संभोग से सुकृति आये असंभोग सदा मन विकृति लाये।
असंभोग का उत्पाद ही विकृति है जो असंभोग बढ़ाये।। 113
असंभोग का शिक्षा से सीधा आनुपातिक रिस्ता चला आये।
रावण जैसा विद्वान ब्रह्मण भी जग में राक्षस कहलाये।। 114
त्याग और बैचारिक सामंजस्य नर नारी के बीच आये।
संभोग बाद समाधी व परमानंद परमात्मा प्राप्त हो जाये।। 115
नारी को अर्धागनी जानकर जो नर बीज नारी बोये।
वो घर में जरूर सम्य दिव्य बालक बालिका होये।। 116
अर्धनारीश्वर रूप ही परम ब्रह्म का पूर्ण रूप आये।
नर नारी का समभाग समयोग से सभ्य संतान आये।। 117
पॉच रोटी मानुष पेट भरे भ्रटाचार से क्यों कमायें।
दो धोती से काम चले तो वार्डरोब क्यों बनायें।। 118
होनहार मेहनती संतान अपनी दम से खुद ले कमाये।
ऐसी संतान तबई होय जब दंपत्ति संभोग से उपजाये।। 119
उच्च शिक्षित है हमारा समाज पर उच्च मूल्य नाये।

भ्रष्ट उच्च पदस्थ की लो लो करें इंसानियत दबाये।। 120
चमक ठई दौड़ लगाकर पतंगा सम मरने को जाये।

नैतिकता से अपंग होकर घुट घुट खुद मर जाये।। 121
चमक चमक में अंतर है एक हमें रास्ता दिखाये।
पूँजी आकर्षित करे और मंद बुद्वि हमें दे बनाये।। 122
जो चमक ढमक ठमक के चले मन आकर्षण आये।
चमक में लचक फचक जुड़े तो अच्छे खाँ बौराये।। 123
आँखो से आकर्षित कर बुद्वि से अंधा दे बनाये।
जहाँ जहाँ चमक चले अंधा भी पीछे–पीछे जाये।। 124
जब अंधे के हाथ बटेर नही आये तो पछताये।
चमक धमक पास से चली गई सोच सोच पछताये।। 125
बंदा सोच सोच कर पछताए अपना समय दे गँवाये।
लाख करो उपाय गया समय तो वापस नहीं आये।। 126
असंभोग की उपज नीच सोच के नर नारी बनाये।
संभोग की उपज ही विवेकी बुद्विमान नर नारी बनाये।। 127
चमक के पीछे चिंता में अपना समय दें गवाये।
अपने पूतन पूतिन के लाने समय नहीं निकाल पायें।। 128
शिक्षा व्यवस्था के साथ में कछू संस्कार दें बताये।
परीक्षा के पहले जो पढ़ा परीक्षा बाद भूल जाये।। 129
एक की बात नहीं जा सबके साथ होता आये।
नाखून नहीं बढ़ाओ छोटन में लड़कन को दई बताये।। 130
जब संतान बड़ी हो गई तब काहे नहीं बताये।
बड़ी बिगड़ी संतान को काबू करवो बड़ा कठिन आये।। 131
छोटे बड़े के बीच इक मझौली अवस्था पाई जाये।
मझौली अवस्था मनुष्य की बिगाड़ सुधार अवस्था ही आये।। 132
तीन से तेरह की अवस्था ज्यादा जिज्ञासा अवस्था आये।
तेरह वर्ष की हार्मोन परिवर्तन की अवस्था कही जाये।। 133

जेई अवस्था में पूतन पूतनी को सबे देवें बताये।

मर्यादा बनी रहे कुल की इज्जत भी ना जाये।। 134

जस आपन आबरु तस दूसरे की आबरु भी आये।

कभी गलत काम ना करे जेही ईश भय सताये।। 135

हिंदु मुस्लिम बुद्ध ईसाई सिख ईश्वर को मानत आयें।

ईश आँख मुँदकर सब देखे ईश अंधा नहीं आये।। 136

कर्म हम जो करें कंपन से ईश्वर तक जाये।

जो आड़ में अपराध करे वो खुद अंधा आये।। 137

बुद्धिमान वह नहीं जो डी.लिट. तक पढ़ जाये।

उच्च बुद्धिमान वह है जो सबको भले संस्कार सिखाये।। 138

शाला शिक्षक को सब गर्व से अपना सर झुकायें।

ऊपर ऐसी स्थिति भी बनती मार्गदर्शक कहने में शर्मायें।। 139

माँसाब की बराबरी शोधदर्शक कभी भी नहीं कर सकते।

माँसाब माँसाब होते हैं पढ़ाते हैं अपना समझ के।। 140

चोरी छिनारी की नकेल जो गुण्डा के हाथ आये।

अच्छा खासा विद्वान पहलवान भी एक बंदरिया बन जाये।। 141

नकेल खींच खींचकर गुण्डा जैसा चाहे बंदा वैसा नचाये।

कुछ दिन बाद नकेल जरुरी नहीं डमरु से नचाये।। 142

गुण्डा राज हावी अब हुआ आय हमने उन्हें बनाये।

इंसानों पे आँख तरेरे प्राध्यापक भी गुण्डो से घबड़ाये।। 143

समभाव नहीं वहाँ पर जहाँ असंभोग की उपज आयें।

संभोग की उपज होगी जहाँ पर समभाव सदा दिखायें।। 144

जन्म मरण विवाह प्रकृति हाथ रामचरित में तुलसी बताये।

घबड़ाये नहीं अस्पताल में टूटी हड्डी भी जुड़ जाये।। 145

भारत पाक युद्ध लड़के अन्ना हजारे जीवित आ जाये।

घर में छिपकर नहीं सोये न्याय की अलख जगाये।। 146

डर डराने वाले में नहीं होता अपने अंदर आये।

सींगहीन बैल को आदमी रास्ता चलत मुक्का मारत जाये।। 147

साँप अपनी राह जाये देखकर आदमी खुद डर जाये।

भय बिन होत ना प्रीत गुण्डा यह रास्ता अपनाये।। 148

लक्षमण बोले एक बार यमराज से भी लड़ जाये।

परशुराम कितने वीर हैं हम उनसे भी लड़ जाये।। 149

प्रेम भाव होय मानुष मन संसार स्वर्ग हो जायें।

सेवा भाव मानव मानव में न्यायालय बंद हो जाये।। 150

लाख गुना कोहरा छाये तऊ भानु अपना प्रभाव दिखाये।

सूर्य सम पतिव्रता सत्य दिखाये और सती हो जाये।। 151

सावन के मेंघ होवे निशा काट भानु भोर दिखाये।

समाज में जा पतिव्रता सूर्य सम अपना प्रभाव दिखाये।। 152

आधा नारी सहे आधा नर सहे संतुलन बन जाये।

अभाव आये भी पवित्र परिवार में अमन आ जाये।। 153

बचपन की नादानी चंचल मन मनसा कर्म पाप कराये।

भारत की हर नारी सती होये पालक जो समझाये।। 154

शठ पर असर करे नहीं यह कविता की लिखावट।

क्योंकि सब शठ हैं ही असम अंसभोग की बनावट।। 155

त्याग रुपी पेंचकस मनुष्य के चरित्र में लाये कसावट।

अच्छा चरित्र ही है मनुष्य के शरीर की सजावट।। 156

उत्तम गुरु की छाया होती है समान वृक्ष वट।

गुरु की छाया पड़त ही सब कष्ट जायें घट।। 157

दुर्लभ है उत्तम गुरु क्योंकि कमी है संभोग की।

असंभोग से जन्मे गुरु भी पाले लालसा भोग की।। 158

शठ हाथों भोजन खाये जो मन शठ हो जाये।

जब मन शठ हो जाये तो नैतिकता घट जाये।। 159

अनैतिक होत ही मनुष्य बुरे कर्म में जुट जाये।

बुरे कर्म होत ही मनुष्य अंदर अंदर घट जाये।। 160

अनुभव विप्रों ने किया शठों से लई दूरी बनाये।

शठ अशठों के बीच की दूरी छुआछूत बन जाये।। 161

आप अनुभव करो निर्मल जन की छाया में जाये।

इनके पास पहुँचते ही मन को शाँति मिल जाये।। 162

शूद्र विप्र दोनों ही मनु सतरुपा की संतान आये।

एक हिंसा में लिप्त रहे दूसरा दूर भाग जाये।। 163

तेइस जोड़ी क्रोमसोम्स सभी मनुष्य में पाये जात है।

मनुष्य को मनुष्य का दर्जा मिले राम बतात है।। 164

मानुष की आत्मा नीच होती है वही पाप कराये।

शूद्र भी मानुष विप्र भी मानुष यह भेद कराये।। 165

उत्परिवर्तन से मनुष्य के भी जीन बदल जाते हैं।

जीन परिवर्तन मनुष्य के व्यवहार में परिवर्तन लाते हैं।। 166

काम पड़त शैतानों को इंसानों की याद आत है।

शैतान इंसान का भेद पूरी तरह भूल जात हैं।। 167

स्वार्थ लागि करें सब प्रीति तुलसी ऐसा बताते हैं।

असंभोग जनित काम निकलते पीठ पर चाकू चलाते हैं।। 168

सभी संभोग जनित संतान आपात में काम आते हैं।

आचार विचार व्यवहार नर नारी नयन नजर आते हैं।। 169

स्पष्ट दिखे व्यवहार नर नारी का संभोग असंभोग जनित।

उच्च काम करे संभोग वाला अंसंभोग वाला करे पतित।। 170

संभोग सात्विक होत नर नारी का होत पूरा सहयोग।

असंभोग में एक ना करत दूसर करत उसका उपभोग।। 171

विवेकशील जन असंभोग को तज संभोग सदा करते हैं।

संभोग जनित पूरा जीते असंभोग अकाल मौत मरते हैं।। 172

विज्ञान सिखाये प्रकृति प्राणी मात्र से प्रेम धर्म सिखायें।

प्रकृति को सब जीव व अजीव मिलकर पूर्ण बनाये।। 173

विज्ञान का ज्ञान होत सदा शुद्ध प्रयोग पर आधारित।

जीवविज्ञान बताये जीवन लीला वनस्पति व जीव जंतु की।। 174

अनैतिक खेती अनैतिक बीज से जो फसल होये तैयार।

अंसभोग का असंभोग क्रम चलता रहे सदा बार बार ।। 175

तो धरा पर अनैतिकता का हो जायेगा पूरा अधिकार।

इसलिए नैतिक खेती नैतिक बीज से फसल करें तैयार।। 176

प्रभाविता का नियम बतलाये प्रभावी गुण ही प्रभाव दिखाये।

नैतिकता प्रभावी हो नैतिक गुण समाज पर प्रभाव दिखाये।। 177

पहली नैतिकता संभोग से समाज में शुरु हो जाये।

नैतिकता से पूर्ण संतति सभ्य समाज में सदा आये।। 178

दूसरी पत्निवृता पतिवृता नर व नारी दोनों हो जायें।

तो नैतिक मूल्य समाज में स्वतः स्थापित हो जाये।। 179

तीसरी नैतिकता नर नारी अपने श्रम का ही खायें।

मेहनत के खून पसीना से उपजी सगुण संतान पायें।। 180

चौथी नैतिकता नमक हलाल नमक का ही डंक बजाये।

जिससे देश में देश भक्त लोगों की बाढ़ आये।। 181

पाँचवीं नैतिकता प्रेम रस सबके मन में समा जाये।

तजो जात पात संप्रदाय क्षेत्र लड़ाई मुक्त हो जायें।। 182

प्रेम रस ऐसो रस कहाये मदिरा फीकी पड़ जाये।

प्रेम रस से तृप्त मनुष्य वेलेंटाइन दिवस खूब मनाये।। 183

प्रेम प्रेम में भेद होता कामुकता प्रेम नहीं कहलाये।

प्रेम प्यास में भेद होता असंभोग प्रेम नहीं कहाये।। 184

नजर नजर में भेद होता प्रेम प्यास अलग दिखाये।

नैतिकता है जहाँ पर वहाँ नजर में स्नेह दिखाये।। 185

अनैतिकता है जहाँ पर वहाँ नजर में प्यास दिखाये।

प्यास काम की सम पपीहा प्यास प्यास ही चिल्लाये।। 186

मनुष्य मन प्यासा ही रहता सदैव प्यास के लिए।

कामी लोग परनारी गमन करें पाप उपहास के लिए।। 187

नैतिकता है जरुरी कुल के उत्तम इतिहास के लिए।

अतः इंसान त्याग करते संतान और नात के लिए।। 188

मैं खुद त्यागी मैं क्यों लिखूँ सिर्फ आपके लिए।

नैतिकता खो हम जीते हैं फिर संताप के लिए।। 189

सोचें क्या हमने जन्म लिया काम पाप के लिए।

अथवा हमारा जन्म हुआ है पुन्य प्रताप के लिए।। 190

विचार से विचार विचार से काम भी बदल जायें।

जादूगर सोचें और जल में आग जला हमें दिखायें।। 191

नैतिक से अनैतिक सामान्यतः समाज में बन न पायें।

विचारो हम क्यों अनैतिक से नैतिक नहीं बन पायें।। 192

अक्सर असर होता संभोग का नैतिक जन बनाने में।

असंभोग कोई कसर ना छोड़े अनैतिक मन बनाने में।। 193

एक पिता की दो संताने दोनों भिन्न स्वभाव दिखाऐं।

संभोग असंभोग का प्रभाव ही स्वभाव में अंतर लाये।। 194

गेमीट निर्माण में आदान प्रदान भी अपना असर बताये।

इससे मुख्य रुप से कुछ संरचना बदले जो दिखाये।। 195

जीन संरचना बदलने से मनुष्य का स्वभाव बदल जाये।

राम लक्ष्मण के जीन प्रभाव बाहर से हमें दिखायें।। 196

पहला काला दूसरा गोरा भेद करने में सरल आये।

पहला धीर वीर गंभीर दूसरा आग को गोला आये।। 197

लक्ष्मण शत्रुघन दोनों एक मात पिता की संतान आये।

दोनों के भाव स्वभाव में अंतर विद्वान इतिहासविद बताये।। 198

पहला श्रीराम की बात नहीं काटे रहे सर झुकाये।

दूसरा अन्याय के विरुद्ध श्रीराम से भी लड़ जाये।। 199

लोगों के आचार विचार में अंतर सबको साफ दिखाये।

अंतर संभोग असंभोग या जीन आदान प्रदान से आये।। 200

संभोग से इंसान बनते असंभोग समाज में शैतान बनाये।

जग यह जाने संभोग असंभोग अपना अपना असर दिखाये।। 201

संतति विकास में जीन व वातावरण दोनों प्रभाव दिखाये।

मनुष्य अपने विकास का अब वातावरण खुद ले बनाये।। 202

सत प्रतिशत नहीं सही तो पिंचानवे प्रतिशत तक आये।

संभोग का वातावरण मनुष्य को नैतिक सभ्य दे बनाये। 203

अभिमन्यु का संदर्भ लीजिये शिशु गर्भ में सीख जाये।

प्रत्यक्ष है वातावरण शिशु के विकास में असर दिखाये।। 204

परिस्थिति भाग्य से बने और भाग्य कर्म फल कहलाये।

भाग्य में जो आये स्वीकारें अपना पिछला कर्मफल पाये।। 205

श्रीराम ताउम्र त्याग सहे इसलिए वह ईश्वर रुप आये।

प्रकृति मनुष्य को कष्ट दे कछु अपना उद्देश्य छिपाये।। 206

कष्ट प्रकृति का श्राप आशीष और उद्देश्य भी आये।

श्राप स्पष्ट दिखत है उद्देश्य जल्दी समझ न आये। 207

त्रिया हो जितनी प्रिया उसकी संतति उतनी नैतिक होये।

यह सत्य बात अकाट्स इसे झुठला न सके कोये।। 208

त्रिया जब चरित दिखाये उससे कोई बच नहीं पाये।

त्रिया जब नाच नचाये अजेय भष्मासुर राख हो जाये।। 209

झूठा प्रेम दंपत्ति के बीच असंभोग की क्रिया कराये।

असंभोग से उपजी संतान सच्चा प्रेम ना कर पाये।। 210

अब कवि आपको एक त्रिया के सब भेद बताये।

कुद त्रिया आँखन से डरें आँखन से दो डराये।। 211

कुछ त्रिया ठुण्डा से डरें एक दो डण्डा जड़ो।

कुछ त्रिया खामोशी से डरें एक हफ्ता चुप रहो।। 212

कुछ त्रिया मरने से डरें तमंचा फरसा घर आयें।

कुछ त्रिया तलाक से डरें तलाक सुर लो अपनाये।। 213

कुछ त्रिया बिल्कुल नहीं डरें तो अपनी दुम घुमायें।

हंस हंस कर उससे अपने सब काम लियो कराये।। 214

त्रिया आँखन से डरे तो तापर हाथ नहीं उठायें।

बीच बीच में उसके सामने अपनी पूँछ दियो हिलाये।। 215

डण्डा बीमारी की दवा दूसरी दवा काम नहीं आये।

डण्डा गुमे नहीं एक अलमारी अलग से लें बनबाये।। 216

नयन डर नारी संभोग की उत्पत्ति जानो सब कोय।

उल्टा डरो त्रिया से जिसमें लाज शर्म नहीं होय।। 217

जग सब जानो निर्लज्ज त्रिया असंभोग की संतान आये।

जग में सब जाने लज्जा नारी का आभूषण आये।। 218

खामोशी से डरती तो भोजन में मिर्ची कम खायें।

कभी कभी अपनी बहन की ससुराल भी घूम आयें।। 219

लौटकर जब आयें तो अपनी बहन के गुण गायें।

बहन बहनोई बाल गोपाल सब अच्छे है ये सुनायें।। 220

सुन सुनकर घुट घुटकर त्रिया अपने आप सुधर जाये।

कभी कभार अपनी बुआ मौसी आदि घर ले आयें।। 221

बुआ की तारीफ करो तो त्रिया जल भुनकर मुरझाये।

मौसी से गपशप करो त्रिया तेवर ठण्डा पड़ जाये।। 222

कभी न डरने वाली नारी जिसको मिल ही जाये।

तो जानो प्यारे दोनों ही असंभोग की उपज आये।। 223

प्यारे अपवाद रुप समाज में ऐसे संजोग बन जाये।

मानो संजोग पिछले जन्मों के पापों का फल आय।। 224

सुनन में खराब लागे ऐसे कर्म करें अगर कोय।

जन्नत से जमीन पर आयें पूर्वजों का पतन होय।। 225

जे संस्कारहीन संतान पाले उसका ही पतन हो जाये।

पतन का कारण असंभोग से जन्मी संतान बन जाये।। 226

कुछ पौधों में फल जल्दी लगे कुछ सालों लगाये।

ईश्वर नहीं बदले फल वही मिले जो बीज लगाये।। 227

अवनति पर कोई खुश नहीं होय कर्म पर रोये।

रोने में समय खोने पश्चाताप करे कछु नहीं होये।। 228

संभोग की संतति होय तो उन्नति करें सब कोये।

शुभ कर्म की उन्नति होये हर्ष करते सब कोये। 229

कर्म फल बदलने में प्रकृति अक्षम जाने सब कोये।

प्रकृति नहीं बख्से राम अथवा राम का बाप होये।। 230

क्रिया की प्रतिक्रिया प्रकृति का नियम जाने सब कोये।

शंषय की बात नहीं विज्ञान से यह साबित होये।। 231

सम विषम परिस्थिति प्रकृति का ही जरुरी अंग आये।

सम परिस्थिति में जैसा चाहे वैसा करे हर कोये।। 232

विषम परिस्थिति में शुभ काम करे जो वीर होये।

असंभोग ना कर मानव नेक संतान संभोग से होये।। 233

नैतिकता का यार है त्याग त्याग कुर्बानी का पर्याय।

जो कुर्बानी करते परमात्मा उसी पर खुश हो जाये।। 234

कुर्बानी देकर जिन मुनी स्वइच्छा से समाधिष्ट हो जायें।

यमदूत यमराज जैसे भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ पायें।। 235

ऊपर हिसाब अलग अलग होता है क्षतिपूर्ति कोई नाये।

कर्मफल अमिट है यह हमें गीता आदि दिया बताये।। 236

पाप पुन्य का अलग अलग भण्डार सृष्टि में आये।

कुछ पाप चुनें कुछ पुन्य चुनें अलग कर्म कहलाये।। 237

कर्मानुसार आत्मा के पास पाप या पुन्य पहुँच जाये।

विवेकहीन मानुष पाप पुन्य में भेद नहीं कर पाये।। 238

कुछ लोग कहत प्रायश्चित करो उससे पाप मिट जाये।

प्रायश्चित से पाप मिटें नहीं दोबारा नहीं कर पाये।। 239

अगर सुर असुर महायुद्ध से बचाना चाहो ये दुनिया।

तो समय से सब इंसान मिलकर बचाओं अपनी कन्या।। 240

आदि से अनंत सुर असुर समाज का अंग आये।

इतिहास साक्षी असुरों ने सुरों को स्वर्ग से भगाये।। 241

असुर राज की शुरुआत हो गई उमाशंकर दे बताये।

अगर सुर राज चाहो मानुष साधना शुरु हो जाये।। 242

साधना के साथ साथ कठोर तपस्या भी शुरु होये।

बुजुर्गो के वश की बात नहीं युवा जाग्रत होयें।। 243

पुरुषों के वश की बात नहीं महिलायें जाग्रत होयें।

अन्याय असीमित होगा यदि ऐसे ही नारी शक्ति सोयें।। 244

संभोग की संतान में नैतिक क्षमता भरपूर पायी जाये।

जागो नर नारी असंभोग छोड़ संभोग को लें अपनाये।। 245

विवेकी नर कोई तो उसका पिछला जन्म कर्मफल आये।

विवेक बुद्धि से अधिक महत्व का सही निर्णय कराये।। 246

परधन का लालच मानुष को एक पापी देता बनाये।

काजल लगा दामन पर दिमाक को दीमक जैसे खाये।। 247

दाग बेदाग वर्गीकरण में दाग जिस दामन पर जाये।

दागी अपनी भावी संतति को दागदार शर्मिंदा कर जाये।। 248

परिवार में कलंक लगाने वाला भी नमक हराम कहाये।

किसी को नमक हराम बोलो तो आगबबूला हो जाये।। 249

डर हमारे अंदर है बाहरी केवल उत्प्रेरण क्रिया कराये।

हिम्मत हमारे अंदर है उत्प्रेरण क्रिया को निष्फल बनाये।। 250

अनैतिकता जहाँ घर कर जाये सदा डर उसे सताये।

नैतिकता जिस मानुष में उसकी हिम्मत सौ गुना बढ़ाये।। 251

नैतिकता व अनैतिकता दो पलड़ा हैं अपना चुनाव करायें।

मानुष जिस पलड़ा को चुने उसी पलड़ा को पायें।। 252

काम लालच मानुष को लगाये काजल धुल ना पाये।

काजल लगा दामन पर दिमाग को दीमक सम खाये।। 253

दाग बेदाग वर्गीकरण में दाग जिस दामन पर आये।

वह अपनी वंशावली को भी दागयुक्त सदा कर जाये।। 254

कुल में कंलक लगाने वाला भी नमक हराम आये।

नमक हराम संतान असंभोग से इस जग में आये।। 255

डर हमारे अंदर बाहर वाला इसे उत्प्रेरण से जगाये।

हिम्मत हमारे अंदर है पर डर हिम्मत को डरवाये।। 256

अनैतिकता जहाँ घर कर जाये सदा डर उसे सताये।

नैतिकता जहाँ बैठे हिम्मत को सौ गुना तक बढ़ाये।। 257

नैतिक अनैतिक दो पथ हैं अपना अपना चुनाव करायें।

जो जिस पथ को चुने उसी पथ पर जाये।। 258

खुदा को कुबार्नी है प्यारी तो हम क्यों घबरायें।

कुबार्नी वही दे सकते जो संभोग की संतान आयें।। 259

नारी दोष दे कलारी को मधु पिलाने के लिये।

कलारी दोष दे नारी को बंद कराने के लिये।। 260

नारी कलारी के बीच छत्तीस आंकड़ा सदा के लिए।

सरल नहीं नारी कलारी विवाद निपटाना नर के लिये।। 261

नारी कलारी मुद्दा छोड़ते हैं किसी और के लिये।

कोई सम्भोग से जन्मेगा यह विवाद निपटाने के लिये।। 262

शराबी सदा बोले जल्दी करो वरना दो डण्डा दिये।

नारी को यह दुर्भाग्य मिले बहुधा गम लिये जिये।। 263

मंदिर जाने मिले नहीं रसोई में ही वंदना किये।

शादी से पहले यमराज क्यों ना मुझे उठा लिये।। 264

ऐसी स्थिति में संभोग संभव नहीं अभागी के लिये।

यह स्थिति अति घातक होती मानव जाति के लिये। 265

कुछ पति पत्नि पीड़ित रोज कलारी में शराब पियें।

बीबी की अनुमति नहीं तो फिर चुपके खिसक लिये।। 266

मदिरा विक्री नफा की ठेकेदार व सरकार के लिये।

कलारी में और भी मिलते हैं अपने गम लिये।। 267

सब शराबी अपने अपने गम बॉटते यारी के लिये।

पीकर लौटते हैं घर अपने गम कुछ कम किये।। 268

बीबी की खराबी बनाती शराबी गम भूलने के लिये।

वरना पानी पीना पर्यात्प है जीवन जीने के लिये।। 269

घर कड़वा हो तो मधुशाला मधु पिलाने के लिये।

घरवाली गम दे तो कलारी गम भुलाने के लिये।। 270

व्युत्पत्ति माने निशा में काम करने वाला निशाचर आये।

निशा में संभोग क्रिया उचित ऐसा अपने बुजुर्ग बताये।। 271

शब्दकोष में निशाचर का पर्याय राक्षस व नायक आये।

तो निशा में संभोग करने वाला भी निशाचर कहलाये।। 272

रति क्रीड़ा पर रवि शोम अपना अपना प्रभाव दिखाये।

रति क्रिया वैज्ञानिक शोध का मुद्दा बनकर सामने आये।। 273

मानुष रात की बजाये दिन में अधिक गतिशील आये।

निश्चय ही शुक्राणु अण्डाणु की गति पर प्रभाव दिखाये।। 274

तब तो दिवा सहवास सटीक है संतानहीन के लिये।

शोध का विषय स्थिति जानना शुक्राणु गति के लिये।। 275

असंभोग की उपज वाले मानुष ही विकृत मन पायें।

बलात्कार के भागी बनते जो असंभोग की उपज आयें।। 276

विकृत मन ही मानुष से चोरी धोखाधड़ी अपराध कराये।

शूद्र कर्म लिप्त मानुष शूद्रता से निकल नहीं पाये।। 277

छिनारी ऐसा कर्म है लोक परलोक दोनों खा जाये।

लोक में दण्ड उपहास मिले निशा नींद नहीं आये। 278

व्यभिचारी के कुल के लोग सिर झुकाकर के जियें।

उपहास लोगों से सुन पियें गम भुलाने के लिये।। 279

व्यभिचारी कुल के लोग जब जाये शादी के लिये।

कोई अपनी संतान नहीं दे व्यभिचारी कुल के लिये।। 280

कलंक स्थायी लगता घटना होती थोड़ी देर के लिये।

काज ऐसा होता मजबूर करता मुँह छिपाने के लिये।। 281

परिवार एक नमूना बन जाता है जमाने के लिये।

लोग परिवार के बारे में पूछते जानने के लिये।। 282

लोग कई कोशिश करते कलंक को छिपाने के लिये।

आने वाली पीढ़ी हो जाती आँसू बहाने के लिये।। 283

पोते पोतियाँ सदा बद्दुआ कहते अपने पुरखों के लिये।

विवेकी लोग सदा त्याग करते अपनी पीढ़ियों के लिये।। 284

दुराचारी परलोक में दीर्घकाल के लिए नरक में जाये।

नरक में भी निम्न कोटि का स्थान स्थायी पाये।। 285

संसार में चोर को कोई अपने घर नहीं बुलाये।

पास कहीं चोरी हो उसको पुलिस का बुलावा आये।। 286

हर बार पुलिस करे धुनाई जितनी बार चोरी होये।

यकीन करे न कोई फिर चाहे जितनी शराफत बतायें।। 287

वंश अपने आप समाज से अलग थलग हो जाये।

मानव समाज में रहते हुए भी सामाजिक न कहाये।। 288

कुछेक इने गिने चोर ही उसका साथ दे पायें।

अच्छे लोग उसके घर रिश्तेदारी करने में भी घबराये।। 289

सामाजिक स्तर वंश का सदा के लिए गिर जाये।

उसके पुरखे दुखी होयें कुल में कलंक दिया लगाये।। 290

स्वर्ग की जमात में उसके पूर्वज कर्म से शर्मायें।

बात बड़प्पन की आये वो पुरखे बोल नहीं पायें।। 291

लड़कों को चोर का लड़का चोर कह लोग चिढ़ायें।

लड़के बाप के कृत्य पर कुछ बोल नहीं पायें।। 292

सामाजिक जो जन बनना चाहें त्याग लें वे अपनाये।

बिना त्याग समाज में सच्ची प्रतिष्ठा कोई ना पाये।। 293

''पानी गये न ऊबरे मोती मानुष चून'' रहिमन गाये।

पानी दोबारा चढ़ाना चाहे तो भी चढ़ नहीं पाये।। 294

असली असली होत है असली से नकली न टकराये।

असली नकली जब भिड़े नकली की पोल खुल जाये।। 295

पोल खुलत ही नकली अपने आप पस्त हो जाये।

पस्त आदमी मस्त आदमी से संघर्ष कर ना पाये।। 296

प्रतिस्पर्धा में जो टिके नहीं विकास से हट जाये।

अस्तित्व के लिए संघर्ष जरुरी है जीवविज्ञान हमें बताये।। 297

सृष्टि में उपयुक्त की जिविता डार्बिन का सिंदाँत बताये।

समाज में पस्त समाज के किसी काम ना आये।। 298

जो काम का नहीं होवे उसे कचरा समझ हटायें।

लोग कचरा बाहर फेकें जो मिट्टी में मिल जायें।। 299

त्यागहीन कचरा मानुष लोक में अगर चल भी जाये।

जन्नत में दरवाजा के अंदर कभी नहीं जा पाये।। 300

उसे डण्डा मारके यमदूत तुरंत वहाँ से दें भगाये।

लोक में ठौर नहीं स्वर्ग में प्रवेश नहीं पाये।। 301

त्रिशंकु बनकर अधर में वह प्रेत योनि को पाये।

प्रेत योनि नहीं सह पाये तो नरक में जाये।। 302

नरक का अस्त्वि है कहीं सभी धर्म स्वीकार लिये।

जो पाप करते हैं जहन्नम बना है उनके लिये।। 303

जैसे जेल बनते हैं अपराध करते हैं उनके लिये।

यहाँ न्याय में भेदभाव होता है बड़ो के लिये।। 304

ईश्वर के यहाँ न्याय होता है सबके के लिये।

नरक में पापी लोग जाते हैं सड़ने के लिये।। 305

नर नारी नरक नाम के सुनते ही काँप जाये।

धर्म परायण ऐसे नर नारी संभोग की उपज आये।। 306

मानव समाज में एक भेद नर और नारी आये।

दोनों को विज्ञान भाषा में होमो सेपिएंस कहा जाये।। 307

दुनिया में जितने मनुष्य हैं एक जाति के आयें।

दो नाम पद्धति में होमो वंश ऐपिएंस जाति आये।। 308

दो नाम पद्धित जैसे बाप बेटा के नाम आयें।

कोई भ्रम ना रहे आसानी से पहचान में आयें।। 309

सरकारी काम में भी सदैव दो नाम लिखे जायें।

बाप बेटा का नाम साथ लिखते भ्रम मिट जाये।। 310

दुनियाँ में जितने मनुष्य हैं एक कुल के आयें।

सभी लोग हिंदु धर्म से वसुधैव कुटंबकम में आयें।। 311

वैज्ञानिक दृष्टि से मानव जाति में अंतर नहीं आये।

अपने कर्म से मानव इंसान या शैतान बन जाये।। 312

कर्म प्रधान विश्व रामायण में तुलसी ये कह गये।

इंसान व शैतान दो किस्म दुनिया में पहचान पाये।। 313

कर्म मानव धर्म और दानव धर्म में भेद करवाये।

धरा पर जैसे सनातन में असुर और सुर कहलाये।। 314

एक जन्नत है एक जहन्नम है कहीं सृष्टि में।

ऐसे सभी धर्म मानते हैं अध्यात्म की दृष्टि में।। 315

जहन्नम में जा एक गाली लोगों की स्मृति में ।

नरक मिलत है लोगों को बहुत बड़ी गलती में।। 316

देर सबेर न्याय सभी को मिलता है प्रकृति में।

जो जहन्नम पहुँच गया तो होता है दुगर्ति में।। 317

जानिये वह फँस गया समुद्र की भाटा गति में।

कैसे निकलें वहाँ सोच ही नहीं आती मति में ।। 318

नरक से पति को बचाये शक्ति होती सती में।

नरक गति से मनुष्य बचे शक्ति होती भक्ति में।। 319

चरित्र की चर्चा अब कोई नारी नहीं होती सती।

क्या नर नारी दोनों की मारी गई है मति।। 319 क

चरित्र चमके भानू सम पति मौत पत्नि होत सति।

प्रजातंत्र में नारियों के सत्य की हो रही दुर्गति।। 319 ख

कोई नहीं रोक सके प्रभाकर के तेज प्रकाश को।

सति होती पत्नि दिखाती अपने प्रेम सह सत्य को।। 319 ग

सति वही होती जिसका सत्य होता है शुद्ध सही।

संसार में नारी सत्य को कोई रोक सकता नहीं।। 319 घ

सत्य के रक्षक हो गये नारी सत्य के भक्षक।

जिन्हें जन जग में पूजते वही हैं असली राक्षस।। 319 च

राक्षस सज्जन बन समाज में अपनी पूजा करा रहे।

कन्याओं का सत्य खराब नीच अपनी नीचता दिखा रहे।। 319 छ

नारी उपभोग की वस्तु ऐसा समाज को बता रहे।

नीच का मुँह देखत पाप लगत सयाने बता रहे।। 319 ज

भक्ति से परिस्थिति बदले और अंतर आता मति में।

मनुष्य फँस नहीं पाता कभी खराब कर्म गति में। 320

कर्म संयोग बनते हैं खराब असंभोग की उत्पत्ति में।

परिस्थिति को बदलना वश में निहित है प्रकृति में। 321

जहन्नम कहीं ना कहीं नीचे स्थित है प्रकृति में।

नरक नीचे स्वर्ग ऊपर ऐसे मान्यता हिंदु दृष्टि में।। 322

नरक में पीड़ा पाये आत्मा जाये चौरासी गति में।

जहन्नम हो सकता है जमीन के नीचे मिट्टी में।। 323

चोट लगे तो दवा नहीं मिले मृदा समृष्टि में।

बैरी भय सताता रहे नींद नहीं आये निशी में।। 324

बार–बार मृत्यु पीड़ा से गुजरे चक्कर चौरासी में।

मृत्यु भय होता हय हाथी से लेकर चींटि में।। 325

उपचार बिना बहुत कष्ट पायें सब प्राणी व्याधि में।

मानुष मृत्यु भय योग करते देह त्यागते समाधि में।। 326

उसी के रहने के लिए जहन्नम बना सृष्टि में।

अति पाप अभिलेख है जिसकी आत्मा की स्मृति में।। 327

मानव धर्म अलग है किसी संप्रदाय से रिस्ता नाये।

प्रार्थना रुप भिन्न हमें हिन्दु बौध ईसाई इस्लाम बनाये।। 328

हिंदु धर्म के अंदर ही होते वैष्णय शैव संप्रदाय।

भेद करें तो भेद करते करते व्यक्ति पर आये।। 329

एक व्यक्ति दूसरे से अलग होता अलग नाम आये।

एक व्यक्ति के अंगूठा का निशान दूजे से अलगाये।। 330

अंगूठा छाप निशान जग में पुरानी पहचान पद्वति आये।

आधुनिक युग में ''उगंली छाप'' नाम से जाना जाये।। 331

मानव धर्म अपनाने में विश्व विरादरी का भला होये।

जहाँन में परेशान नहीं कर सकें किसी को कोय।। 332

दुनिया में देश नाम हटा प्रशासनिक इकाई किया जाये।

सबको मिला संयुक्त राष्ट्र सेवा को मजबूत किया जाये।। 333

सब प्रशासनिक व्यवस्था में ऐसा कुछ सुधार किया जाये।

चाहते हुए भी कोई ताकतवर तानाशाह ना बन पाये।। 334

जो दूसरों की पीड़ा हरते मानुष वे मानव कहलाये।

मानव के उल्टा जो व्यवहार करें वे दानव कहलायें। 335

मानव का विलोम दानव दानव दमन का पथ अपनायें।

सच मानों दुनिया में दानव सदैव असंभोग से आयें।। 336

संभोग को बढ़ावा दो यदि चाहें अपना प्रजातंत्र बचाये।

ताकि आपके घर कोई दानव उत्पन्न नहीं हो पाये।। 337

राजतंत्र में राज चले राजा की नीति जैसी बनाये।

प्रजातंत्र में राज चले प्रजा अनुसार प्रजा जस बनाये।। 338

राज और नीति जोड़ने के बाद राजनीति बन जाये।

प्रजा की राय से नीति बने तो प्रजानीति कहलाये।। 339

प्रजा के प्रतिनिधि राज करें तो प्रजातंत्र बन जाये।

राज नीति अनुसार चले तो प्रजातंत्र सफल हो जाये।। 340

सम विचार के व्यक्तियों के दल राजनीतिक दल आयें।

चुनाव जीतने के बाद राज नीति अनुसार ही चलायें।। 341

प्रजातंत्र में प्रजा ही कतार बनाने से दूरी बनाये।

घूस दे बगल से काम कराये अपनी मजबूरी बताये।। 342

प्रजातंत्र में खूब कामचोर हो गये सदा बहाना बनायें।

झूठ और घूस चलन में आये सच्चाई रहे छिपाये।। 343

पढ़े अनपढ़े अधिकांश लोग भ्रष्ट तंत्र में ढल गये।

अनीति का विरोध करने की क्षमता सब में नाये।। 344

झूठ और घूस इंसानो की सूझ नहीं कहा जाये।

शैतान तंत्र में घुस गये जिन्हें अंसंभोग ने उपजाये।। 345

शिक्षा का मूल उद्देश्य जहाँ पर घूस बन जाये।

पालक पढ़ाये बालक वह विषय जिससे घर घूस आये।। 346

अपने बालक को घूसखोर बनाने में शर्म नहीं आये।

घूस के कपड़े गहने पहनकर शैली में चलें लचकायें। 347

कामचोर लोगों ने ही घूस को दिया है बढ़ाये।

बोलते सही काम के लिये रुपये देना घूस नाये।। 348

घूष और बख्शीश में लोग अंतर समझ ना पायें।

सही काम के एवज में रूपये देना बख्शीश आये।। 349

गलत के एवज में रूपये देना घूष बन जाये।

तो क्यों ना बख्शीश की दर नियत हो जाये।। 350

बख्शीश की दर नियत होने पर कमीशन बन जाये।

कभी कभी कुछ कर्मचारी कमीशन खा जेल में जाये।। 351

बख्शीश में रूपये तो सिर्फ अमीर ही दे पायें।

रूपये के बदले काम सिर्फ अमीरों के हो पायें।। 352

सभी काम करवाने के लिये दो खिड़की बन जायें।

एक में अमीर दुसरे में गरीब कतार लग जायें।। 353

अमीर यह देखकर खुश होंगे कि वे गरीब आयें।

गरीब भी खुश होंगे कि अमीर कतार में आयें।। 354

अमीर गरीब खुश हों जब दोनों कतार पास आयें।

प्रकृति प्रदत्त स्वभाव है दोनों में मेल नहीं खाये।। 355

अमीरों को देख गरीब खुश व खुद को गरियायें।

गरीबों को देख अमीर सोचें अपना कर्म फल पायें।। 356

कहीं चोरी न करलें ऐसा विचार मन में आयें।

चोरी करने के लिए कहीं मुझे ही दें निपटाये।। 357

ऐसा सोच सोच हर अमीर सदा गरीब से घबराये।

अमीर के प्रति गरीब का द्वेश सदा से आये ।। 358

अमीर गरीब का भेद कर्म तथा जन्म से आये।

जन्म से अमीर गरीब पिछले जन्म का कर्मफल आये।। 359

कर्म लेखा अमिट फल दिये बिना मिट नहीं पाये।
कर्मफल खाना ही पड़े बंदे चाहे लाख करो उपाये।। 360
कुछ फल मीठे लगे कुछ कड़वे खाते जी मिचलाये।
बार बार कोशिश करें कड़वा फल खाया ना जाये।। 361
मीठा फल भाग्य से मिले कड़वा फल दुभार्ग्य आये।
मीठा फल नहीं मिले जब तक कड़वा ना खाये।। 362
पूरे फल खाना ही पड़ते चाहे फल कोई आये।
कर्म फल बँटवारा निष्पक्ष होता पूजा काम न आये।। 363
कुछ मीठे फल भी जहरीले होत काम ना आयें।
कड़वे फल भी अच्छे होत काम दवा के आयें। 364
अपवाद भी प्रकृति का नियम है प्रकृति ने बनाये।
संचित पाप पुण्य के कारण अपवाद नियम लग जाये।। 365
प्रकृति का संचालन प्रकृति ही करे प्रकृति के लिए।
हम अपना संचालना खुद ही करते अपने के लिए।। 366
हम प्रकृति में रहते भिन्न होते औरों के लिये।
हम भिन्न नही हो सकते हैं प्रकृति के लिए।। 367
अगर भिन्न में अंश बड़ा होता हर के लिए ।
हर हाल परिणाम धनात्मक आये हर किसी के लिये।। 368
नियम है प्रकृति का निष्पक्ष सदा सभी के लिए ।
न्यायाधीश तुल्य होते जो जीते हैं न्याय के लिए ।। 369
अधिकाँश लोग तरसते हैं जहाँ में कौरों के लिये।
धन्य फिर भी जीते रहते वे औरों के लिये।। 370
जहाँन में कुछ लोग तरसते है दानों के लिये।
कुछ लोग दानों का उपयोग करते मय के लिये।। 371
संभोग जनित नर खाते जरूरी जितना जीने के लिये।
बाकी रख लेते हैं साल और महीनों के लिये।। 372
बसुधा कुटुम्ब है बचा भोजन बेसहारा को दे आयें।
उपकार करें भूखों पर वह भी आपका कुटुंब आये।। 373

दीन हीन होत हैं निश्चय नहीं कमीना भी आयें।
अतः इंसा के रास्ते यथासंभव बंदे बने उनके सहाये।। 374
नेक इंसान के सदा बनो मददगार मानव धर्म अपनाये।
मजबूरी देख किसी की जाति धर्म को दें भुलाये।। 375
यदि समय पर हम मानव धर्म को नहीं अपनायें।
तो दुनिया में दानव धर्म लेगा अपने पैर फैलाये।। 376
संसार में सुर असुर महायुद्ध का काल करीब आये।
कभी सुर जीते कभी असुर जीते हमें इतिहास बताये।।377
सुरों की आवादी बढ़ाने के लिये संभोग जरूरी आये।
दिन दूनी रात चौगिनी असुरों की संख्या बढ़ती जाये।। 378
कन्या भूण हत्या करके नारी संतुलन को दिया मिटाये।
संतुलन बनाने के लिए प्रतिक्रिया प्रकृति का गुण आये।। 379
नारी सौतन सह सकें नर देखत ही मर जाये।
नारी जो सौत रखे शिशु जन्म दर बढ़ जाये।। 380
जब भी समाज में नर नारी अनुपात बिगड़ जाये।
दो राज्यों के बीच सुर असुर युद्ध हो जाये।। 381
युद्ध में नर नर को काटें काटम काट मचाये।
बहुतायत दर से नर मरें नारी बची रह जायें।। 382
फिर बचे कुचे नर बहुनारि प्रथा को लें अपनाये।
जनसंख्या की पूर्व अवस्था पाने में सदियाँ लग जायें।। 383
युद्ध में बचे नर मानव या दानव राज्य बनाये।
संभोग की उपज या असंभोग की नर संख्या बढ़ायें।। 384
जिसका राज्य बने वह युगों युगों तक चलता जाये।
सुर असुर महायुद्ध से फिर जन संख्या घट जाये।। 385
कन्या भूण हत्या के लिये दहेज मुख्य कारण आये।
यह तो आप सब लोग जानते हैं बिना बताये।। 386
कन्या पक्ष सदा भूके अहं भी एक कारण आये।
लोग कन्या पालन की जबाबदारी से पीछे हट जायें।। 387

शिशु जन्म से पहले दूध की व्यवस्था हो जाये।
प्रभु व्यवस्था है जो प्राणियों के लिए प्रकृति लाये।। 388
आँचल में दूध कम होते ही दाँत निकल आयें।
शिशु दूध के साथ साथ अन्न चबा चबाकर खायें।। 389
पूर्णरूप से दूध आना जब तक बंद हो पाये।
शिशु अन्न पर तब तक पूर्ण निर्भर हो जाये।। 390
शिशु जन्म से पहले माँ का बजन बढ़ जाये।
यह भी ईश काम शिशु पालने में सहायक आये।। 391
कन्या हत्या कर मानव समाज को लंगड़ा दे बनाये।
सब जाने सबूत के बराबर लँगड़ा चल नहीं पाये।। 392
समाज का खाये और समाज को ही लंगड़ा बनाये।
ऐसे लोग असंभोग की उपज व नमक हराम आये।। 393
कन्या का पालन कर सकने वाले लोग आगे आयें।
जन संख्या संतुलन के लिए मानुष मानव धर्म निभायें।। 394
कन्या जब तक कन्या रूप है देवी समान आये।
कोयल सम जब बोले सबका मन खुश हो जाये।। 395
कन्या मात पिता से डरे मर्यादा में रही आये।
भैया भैया भाई को कहे डाँट मार भूल जाये।। 396
कन्या की शीतल शक्ति से क्रोध शाँत हो जाये।
कन्या जब सामने आये सब क्रोध ठण्डा हो जाये।। 397
जैसे ही कन्या मुस्कुराये जन मन खुश हो जाये।
कन्या जब बब्बू बोले मानसिक तनाव कम हो जाये।। 398
घर की सब सफाई करे झाडु पोंछा भी लगाये।
भोली लड़की घर के सब काम करे भोजन बनाये।। 399
कम से कम इतना काम करे जितना वो खाये।
फिर भी लोगों को खलत है समझ ना आये।। 400
शायद नर डरें नर की त्रिया जो चरित्रं दिखाये।
शायद त्रिया चरित्रं का भय कन्या में नजर आये।। 401

उस नर को कन्या जन्म कभी रास नहीं आये।
जो कर्कस त्रिया के चरित्रं का शिकार हो जाये।। 402
नारी जाति के नाम से मानुष ऐसे घबरा जाये।
जैसे जंगल में बैल बाघ देखते ही डर जाये।। 403
भोली कन्या से कन्या कैसे त्रिया चरित्रं बन जाये।
ये समाज आत्मा व जीन शोध का मुद्दा आये।। 404
क्या यह जन्मजात गुण होता जो बाद में दिखाये।
या पति की परेशानी उसे त्रिया चरित्रं दे बनाये ।। 405

या उम्र के साथ रसायनों में बदलाव आ जाये।
रसायन मन में परिवर्तन नर में अपना असर दिखाये।। 406
या असंभोगी की उपज से यह गुण आ जाये।
वातावरण का असर जन के स्वभाव पर पक्का आये।। 407
दवा खाने से मनुष्य का अवसाद दूर हो जाये।
आधा पागल मनुष्य भी दवा से कुछ सुधर जाये।। 408
या त्रिया ध्यान करना चाहे समय ना मिल पाये।
परमात्मा के ध्यान बिना भी आत्मा व्याकुल हो जाये।। 409
जैसे माँ वियोग से बच्चों का व्यवहार बदल जाये।
व्याकुल आत्मा जिस तन में हो कर्कष हो जाये।। 410
हो सकता है ध्यान से हार्मोन्स संतुलन बन जाये।
चिड़चिड़े स्वभाव का सीधा संबन्ध काम वासना से आये।। 411
काम इच्छा से सवित हार्मोस संतुलित ना हो पाये।
तो वह त्रिया के स्वभाव पर अपना असर दिखाये।। 412
गोद में बच्चा होने पर महिलाएँ शाँत हो जायें।
शायद उस व्यवहार में कोई रसांयन ही प्रभाव दिखायें।। 413
जैसे कैथा मीठा देखत मुँह में लार आ जाये।
वैसे काम कामना से हार्मोसं खून में आ जाये।। 414
शरीर में काम रसायन दूसरे रसायन से भिड़ जाये।

शरीर में रसायनों की लड़ाई से तंत्रिका तंत्र गड़बड़ाये ।। 415

तंत्रिका तंत्र की थर्राहट मनुष्य को चिड़चिड़ा दे बनाये।

कर्कष स्वभाव के लिए मृग तृष्णा ही उत्तरदायी आये।।416

मृग तृष्णा हानिकारक होती काम अथवा दाम के लिये।

शाँत स्वभाव मनुष्य नारी भी कर्कष स्वभाव बन जाये।। 417

जहाँ कर्कस स्वभाव नारी होतीं शाँति भंग हो जाये।

अशाँति का माहौल देख लक्ष्मी घर से चली जाये।। 418

इस प्रकार तृष्णा का संबंध कर्कस स्वभाव से आये।

और कर्कस स्वभाव का संबंध काम गरीबी से आये।। 419

ईश्वर ध्यान की नासमझ मनुष्य का जीवन खा जाये।

कहावत लागू होय जो बिगड़े तो बिगड़ता ही जाये।। 420

आप जानते गिरते घर की ईट निकालें सब कोई।

कर्कस स्वभाव का संबंध असंभोग की संतति से होई।। 421

इसलिए असंभोग को छोड़ संभोग किया करें सब कोई।

संभोग से मानसिक संतुलन वाली संतान का जन्म होई।। 422

नर से परिवार का नाम चलता जानते सब कोई।

समाज में कन्याभूण हत्या का एक कारण यह होई।। 423

नर नारी संबंध के बीच नहीं आ सकते कोई।

इसलिए अपने पुरखों ने यह नाम पद्धति अपनाई होई ।। 424

नारी धरती समान जो बीज बोये वही होता आये।

कुल में कुलीनता रहे अतः जाति शादी परंपरा आये।। 425

उच्च गुणों का संरक्षण समजातता से ही होता पाये।

अतः उच्च वर्ण ने उच्च जाति विवाह लिया अपनाये।। 426

उच्च वर्ण सनातन काल से उच्च कोटि के कहलाये।

चयन किया होगा समाज से फिर लिया होगा अपनाये।। 427

उच्च वर्ण को चाहिए कन्या बध पर रोक लगायें।

खुद नहीं पाल सकते तो अनाथालय में दे आयें।। 428

अनाथालय से कोई निम्न वर्ग शादी कर ले जाये।

विषमजाजता से निम्न वर्ण में अच्छी संतति आ जाये।। 429
भविष्य में अच्छी संतान से अच्छी समाज बन जाये।
कन्या बध करने से अच्छा निम्न जाति सुधर जाये।। 430
खून से मोह लगाये जो नाली में बह जाये।
निम्न इंद्रियों से अण्ड शुक्राणु निकलें प्रकृति नियम आये।। 431
गुप्तांग से शुक्राणु निकलते रहें यह प्रकृति नियम आये।
रूधिर मोह से घर में रूधिर बैंक बन जाये। 432
अपना खून यूँ ही नाली में नाही देते बहाये।
प्रकृति प्रदत्त भ्रम की स्थिति सब के साथ आये।। 433
नाली में बहते ही आपका अण्डाणु कचरा बन जाये।
उत्तम है आपके कचरा से एक मानव बन जाये।। 434
हवा में लटकी एक आत्मा को जीवन मिल जाये।
किसी को जीवन देने वाला नर छोटा परमात्मा कहाये।। 435
इसलिए परहित मानुष को इंसान से भगवान दे बनाये।
दूसरों का भला करें यह भगवान का स्वभाव आये।। 436
यदि मानव समाज में भगवानों की संख्या बढ़ जाये।
तो जहान में दानवों लोगों की संख्या घट जाये।। 437
अब नई तकनीक टेस्ट ट्यूब बेबी को लोग अपनायें।
नर नारी अनुपात को संतुलित स्तर तक ले आयें।। 438
वरना सुर असुर युद्ध से लोग नही बच पायें।
टेस्ट ट्यूब से उत्तम गुण की नई पीढ़ी बनायें।। 439
कहावत कदू देख कदू भूरा होय लागू हो जाये।
अब देखा सिखी लोग दो संतान की चलन अपनाये।। 440
एक संतान पालना एक ब्रह्म यज्ञ सम हो जाये।
यज्ञ फल नर नारी में आधा आधा बँट जाये।
कन्या बध की हिम्मत करने वाले असंभोग से आये।
संभोग से आने वाले यह पाप नहीं कर पाये।। 442
दो संतान पालने की प्रथा कानूनन लागू हो जाये।

तुम दो तुम्हारे दो की आवादी स्थिर हो जाये।। 443
स्वाभाविक है वातावरण का असर सब पर पड़ जाये।
अच्छे के साथ रहें तो आप अच्छे हो जाये।। 444
जिनकी संतान नही वे खुद खुदा को कोसत आये।
जिनकी संतान है वे यज्ञ फल का आनंद पाये।। 445
अहम् भी एक बजह जो कन्या भ्रूण हत्या कराये।
लड़की वाले को शादी के बाद सदा झुकने आये।। 446
एक लड़की पाले एक लड़का पाले काम बराबर आये।
इसके बाद भी लड़का वाले सदा अपना रूतवा दिखाये।। 447
कुछ लोग सोचते झुकने से उत्तम लड़की ना होये।
एक लड़का हो गया अब परिवार नियोजन हो जाये।। 448
लड़के वालों के पैर पूजन में सरकार रोक लगाये।
अब दामाद की पैर पूजा कानूनन अपराध बन जाये।। 449
कन्या शादी में परिवार सरकार का सहयोग बराबर होये ।
कनूनन बने एक लाख से ज्यादा खर्च नाहीं होये।। 450
बेटी मारकर महतारी की ममता अंदर अदंर ही रोये।
खुश नही रहता वह परिवार जिसमें जननी जब रोये।। 451
पेट में सुरक्षित समझ कन्या बेफिकर हो सदा सोये।
किसे पुकारे वह कन्या जब जननी ही हत्यारिन होये।। 452
जस तस दूनिया में आये कन्या नफरत कुछ पाये।
बोतल का दूध पिये निर्मम महतारी दूध ना पिलाये।। 453
लड़का की लालसा में लाड़ली घर नहीं आ पाये।
लाड़ली सदैव डरे लाड़का छोटो हो तब से गुर्राये।। 454
जरूरत पड़े बाप की कालर पकड़ रूपये ले मंगाये।
इतने में काम नही बने तो डण्डा दे चलाये।। 455
रूपये तो ले ही ले ऊपर से आँख दिखाये।
लुगाई आते ही पूरे घर में ले कब्जा जमाये।। 456
बाप की संपत्ति में मेरा जन्म सिद्ध अधिकार बताये।

बाप सोचे शादी का लड्डू खाया इसलिए रहे पछताये।। 457
लड़की होवे तो पछताये लड़का होवे तो भी पछताये।
जिसकी संतान नही है तो संतान के लिए पछताये।। 458
पछताने की प्रवृत्ति है जिसके भाग में वो पछताये।
बुजुर्गो ने अपनी शादी के अनुभव सही सही बताये।। 459
युवा होत शादी के लाने सब घूमत मूँह उठाये।
कर्त्तव्य निर्वाह की बात आये तब कुछ लोग पछतायें।। 460
पूरी थाली में खटटो मीठो कड़वो तीखो सब आये।
थाली पूरी ना कहाये अगर एक भी कम जाये।। 461
वैसे जीवन में सुख दुख बैर भलाई सब आये।
इन सबका अनुभव ही जन जीवन को पूर्ण बनाये।। 462
संभोग भी अपने आप में एक समस्या ही आये।
मनुष्य से उसकी ही कन्या भ्रूण की हत्या करवाये।। 463
पुलिस पकड़े भ्रूण हत्या के जुल्म जेल ले जाये।
मनुष्य समाज में सजा याफ्ता अच्छा नही कहा जाये।। 464
सजा याफ्ता मनुष्य का सामाजिक स्तर भी गिर जाये।
सामाजिक स्तर गिरते ही मनुष्य अवसाद में चला जाये।। 465
मनुष्य की अवसाद स्थिति एक मानसिक रोग बन जाये।
संभोग ऐसे एक स्वस्थ मनुष्य को बीमार मनुष्य बनाये।। 466
इसलिये कवि आप सब को भली भाँती दे समझाये।
असंभोग से दूर रहियो यदि सुख की चाहत आये।। 467
बाबरे सुख ढूँढन तुम चले सुख संपत्ति में नाये।
सुख संतोष में होता जो तुम्हारे पास ही आये।। 468
सुख सोचने में है सोचो आप सब सुखी आये।
अंग अंग मेरो सुखी है मेंरी काया निरोगी आये।। 469
छोटे मोटे रोग शरीर के सोचते ही मिट जायें।
कमजोर हो गंभीर रोग जो बैठे हैं जड़ें जमायें।। 470

थोड़ी सो शारीरिक श्रम से पूर्ण निरोग काया पायें।
पहला सुख निरोगी काया सब सयाने अपने अनुभव बतायें।। 471
कुछ लोग कहे ऐसा कि परिश्रम से संपत्ति आये।
संतोषी की संपत्ति रोटी कपड़ा और मकान बन जाये।। 472
संभोग की संतति सदा होत संतोषी समझें ध्यान लगाये।
असंभोग की संतति में संतोष कभी नाहीं आ पाये।। 473
थोड़ी सी सम्पत्ति बिपत्ति परिस्थति के लिए लें बचाये।
इससे ज्यादा सम्पत्ति मुशीबत मानो जान जोखम में जाये।। 474
जब जान जोखिम में होय तो नींद नहीं आये।
जिसे नीदं ना आये वह मानुष दुखी ही कहलाये।। 475
कभी कभी मानुष को सुन्दर नारी की लालसा सताये।
नर बहुत दुखी होय मेरी बीबी सुंदर नहीं आये।। 476
जब आप किसी सुंदर नारी को देखो नजर लगाये।
निश्चय ही आपको उसकी सुन्दरता में सुरूर नजर आये।। 477
सुन्दरी जब कड़वी वाणी में आपको कुछ दे सुनाये।
आपका सुन्दरी चाहत का दुख कपूर सा उड़ जाये।। 478
दुख आपकी सोच में समाया इसलिए आप दुखी आये।
दुख दूर करने को है सबसे उत्तम एक उपाये।। 479
नारी सुरूप हो या कुरूप हो नारी नारी आये।
पंचतत्व की मानुष काया आये पंच तत्व में जाये।। 480
उत्तम है सबको खुश रखें खुद खुश हो जाये।
दुख पछतावा साथ ना छोड़े जो असंभोंग उपज आये।। 481
लाख करो उपाय काया एक दिन मिट्टी बन जाये।
थोड़ी माया सुकून दे अधिक माया चिंता बन जाये।। 482
कवि आपको दे समझाये संभोग का संकल्प लें अपनाये।
संकल्प के साथ विकल्प असंभोग को भी माना जाये।। 483
अविचलित सिद्धाँत व पथ पर चलें जहाँ संकल्प आये।
संकल्प का एक अर्थ बहुत कठोर तपस्या भी कहाये।। 484

तपस्या का परिणाम उच्च कोटि की सफलता में आये।
सफल आदमी सदा शकून से जिये दिल से मुस्कुराये।। 485
एक मुस्कुराते जन को देख दूसरा जन भी मुस्कुराये।
चैन क्रिया क्रिया की प्रतिक्रिया से समाज भी मुस्कुराये।। 486
संकल्प के माध्यम सकल समाज में खुशी आ जाये।
खुशी के खातिर ही मानुष स्वर्ग की आस लगाये।। 487
सामाजिक रिस्ते भी चलते हैं खून के आधार पर ।
व्यावहारिक रिस्ते भी चलते हैं व्यवहार के आधार पर।। 488
रूधिर से मोह होता घर रूधिर भण्डार लेते बनाये।
ताकि उसमें कण्डोम व नेपकिन सदा सुरक्षित रह पाये।। 489
धर्म की व्याख्या करते हैं लोग अपने आधार पर ।
जिसके कारण बहुत लोग हैं मौत की कगार पर।। 490
आत्मरक्षा व परहित करते है परिस्थिति के आधार पर ।
आत्म रक्षा में सब जायज तर्क के आधार पर ।। 491
गरीब मजबूर मानुष अभी भी बिकते हैं बाजार पर ।
उनकी मद्द नहीं करते कट्टर धर्म के आधार पर ।। 492
प्राणी सदा होता है परमात्मा अंश के आधार पर ।
प्राणी वध होता हे अपने स्वार्थ के आधार पर।। 493
बैरी वध होता परिस्थिति आत्म रक्षा के आधार पर ।
आत्मा आत्मा का वध करे स्वार्थ के आधार पर ।। 494
प्राणी प्राणी को खाये धन– ऋण के आधार पर ।
धन– ऋण पद्धति चलती रहे कर्म के आधार पर ।। 495
इस पद्धति से बाहर आयेंगे त्याग के आधार पर।
वरना गर्दन पर बका चले ऋण के आधार पर।। 496
धन–ऋण आत्मा से जुडते गणित के आधार पर ।
सदा धन आत्मा से जुड़े अहिसां के आधार पर ।। 497
अहिंसा किसी को कष्ट न दे किसी आधार पर ।
हिंसा भूल त्याग करें परमात्मा अंश के आधार पर।। 498

त्याग का पर्याय कुर्बानी है व्याकरण के आधार पर।
ईश्वर को कुर्बानी प्यारी है त्याग के आधार पर ।। 499
अपने स्वार्थ की कुर्बानी दें पर्माथ के आधार पर ।
कुर्बानी कर्त्ता ईश प्रिय मानव धर्म के आधार पर।। 500
जिसे जो लगे माने रोकू नहीं किसी आधार पर।
प्रकृति की व्याख्या करता मैं मानवता के आधार पर।। 501
किसी का नियंत्रण नहीं ऊपर वाले की सरकार पर ।
ऊपर वाला अपनी सरकार चलाये गणित के आधार पर।। 502
ऊपर वाले की गणित गलत नहीं किसी आधार पर ।
ऊपर वाले का व्यवहार निर्भर है आपके व्यवहार पर ।। 503
क्रिया कि सम प्रतिक्रया समझो भौतिकी के आधार पर ।
ईश्वर से उम्मीद रखना चाहिये कर्म के आधार पर ।। 504
ईश्वर सबके साथ इंसाफ करें नियम के आधार पर।
ईश्वर के नियम चलाते संसार गणित के आधार पर ।। 505
दो धन दो बराबर चार होये गणित आधार पर ।
दो बटे दो बराबर शून्य हर अंश आधार पर।। 506
प्रकृति पहेली लगे अंतिम कर्म रूकता है इकाई पर।
एक प्राणी आत्मा इकाई है परमात्मा के आधार पर।। 507
कुल परिवार एक इकाई है सामाजिकता के आधार पर।
मीटर एक इकाई है लंम्बाई माप के आधार पर।। 508
जमीन का मूल्याँकन होता नाप उपज के आधार पर।
नारी का मूल्याँकन होता वंश वंशज के आधार पर।। 509
कुंती का नाम रोशन हुआ अर्जुन के आधार पर।
समाज में व्यक्ति को इज्जत परिवार के आधार पर।। 510
परिवार की इज्जत समाज में लुगाई के आधार पर।
लुगाई की इज्जत परिवार में बफाई के आधार पर।। 511
बफाई के पर्याय है विश्वास शब्दकोश के आधार पर।
विश्वासघात सबसे बड़ा पाप है आघात के आधार पर।। 512

आघात समझ लें हथौड़ा और घन के आधार पर।
धोखेबाज नरक में घृणा पाये अभिलेख के आधार पर।। 513
मानव शरीर में कोशिका संरचना व क्रिया ईकाई आये।
कोशिका के अंदर भी बहुत सारे कोशिकांग रहें समाये।। 514
आध्यात्म में आत्मा संरचना व क्रिया की ईकाई आये।
आत्मा के अन्दर भी बहुत सारे आत्मांग रहे समाये।। 515
आत्मा के अन्दर केन्द्रक में अभिलेखी भी पाये जायें।
जिससे पाप पुण्य एक जन्म से दूसरी पीढ़ी जायें।। 516
आत्मा के अन्दर भी एक छोटा अभिलेखी पाया जाये।
आत्मा के अभिलेखी में पाप पुण्य अभिलेख हो जायें।। 517
जैसे जहाँ कोशिका जाये गुणसूत्र भी वहाँ चले जाये।
वैसे जहाँ आत्मा जाये अभिलेखी भी वहाँ चला जाये।। 518
बिना गुणसूत्र सव्य कोशिका कभी जीवित नहीं रह पाये।
गुणसूत्र कोशिका से बाहर आयें तो क्रियाहीन हो जायें।। 519
वैसे ही अभिलेखक के बिना आत्मा नष्ट हो जाये।
अभिलेखक भी आत्मा के बाहर होते निष्क्रिय हो जायें।। 520
अस्तित्व के लिए जीव संघर्ष करें ऐसा विज्ञान बताये।
यही वजह चींटि और हाथी भी मरने से घबराये।। 521
पाप करत करत कभी कभी पुण्य भी होते जायें।
पुण्य करत करत कभी कभी पाप भी होते जायें।। 522
जैसे बंद घड़ी काम की नहीं होगी हमारे लिए।
वैसे निष्क्रिय आत्मा बिना कर्म की खुदा के लिए।। 523
परमात्मा के यहाँ कभी भी नहीं माफ होता है।
बड़ा निदयी है ईश्वर वहाँ सिर्फ इंसाफ होता है।। 524
दुर्वाषा श्राप से अवध बचाना चाहा लखन पैर छूकर ।
लक्ष्मण से भूल हुई राम को अपना भाई समझकर ।। 525
लक्ष्मण राम साथ वन में भटका शूल धूल पर ।
श्रीराम ने देश निकाला किया थोड़ी सी भूल पर ।। 526

बड़ा कठोर है ईश्वर कभी माफ नहीं करता भूलकर ।
सजा सदा देता रहता थोड़ी सी भी भूल पर।। 527
जो श्रीराम कभी रहम नहीं खाया भाई लुगाई पर।
वो राम कैसे रहम खयेगा कभी किसी अन्याई पर।। 528
सामाजिक दृष्टि से राम लक्ष्मण के लिए भाई हुये।
राजनीतिक दृष्टि से राम लक्ष्मण के लिए न्यायी हुये।। 529
मानवीय दृष्टि से राम लक्ष्मण के लिए कसाई हुए।
ऐसे और भी बाली और सुगीव जैसे भइया हुये।। 530
परिस्थिति अनुकूल हो जाये यदि खुदा खुश हो जाये।
किन्तु कर्म के अभिलेखा में परिवर्तन ना कर पाये।। 531
संख्या ज्यादा उनकी जो रहते है सदा डर डरकर ।
गुण्डे अधिक नहीं जब आप चाहें धर दें मसलकर।। 532
मरना स्वाभाविक होता हम सभी का इस दुनिया पर ।
ईश्वर नजर में सुधर जायेगें अगर मरेगें न्याय पर।। 533
आप मेरी बात क्यों मानों सोचो अपने स्तर पर।
विश्लेषण करो मेरी बात का व अपनी परिस्थिति पर।। 534
खुदा ने आपको दिमाक दिया है सोचो किंतु लगाकर ।
खुद के दिमाग पर यकीन करो नही किसी पर।। 535
लोग सुनाये वक्त का हर शह गुलाम हो जाये ।
समय परिवर्तन से राजा रंक रंक राजा हो जाये।। 536
कभी कभी परिस्थिति ऐसी बनती है घबड़ा नर जाये।
करना कुछ चाहे किन्तु उसका उल्टा ही कर जाये।। 537
मसलन चौरी करे और सभी सबूत मिटाने जुगत लगाये।
परिस्थिति वश उल्टा कुछ अच्छे सबूत ही छोड़कर आये।। 538
परिस्थिति बनाना प्रकृति के हाथ जैसे चाहे वैसी बनाये।
जैसे चोरी करने के समय अचानक कोई आ जाये।। 539
हड़बड़ाहट में चोरी करने वाला सबूत छोड़ भाग जाये।
सबूत पुलिस के हाथ लगते चोर कारावास चला जाये।। 540

कारावास के अंदर कोल्हू के बैल जैसे चकियॉ चलाये।
चकिया चलाने में आना कानी करें तो कोड़े खाये।। 541
दिनभर आटा पीसे फिरभी पेट भर खा नहीं पाये।
विचार किया था चोरी के माल से मालपुआ खाये।। 542
चोरी का कलंक एक बार माथे पर लग जाये।
मलाई खाने में भी मलाई का मजा नहीं आये।। 543
जैसे परिस्थिति का प्रभाव मानव जीवन में परिवर्तन लाये।
वैसे परिस्थिति का प्रभाव पुण्य पाप अभिलेख पर आये।। 544
आत्मा का अभिलेख फल भोगने तक संरक्षित रहा आये।
मनुष्य लाख उपाये करे तो भी मिटा नहीं पाये।। 545
कर्मफल का भोग मतलब कर्म भोगने से मिट जाये।
जहन्नम में नरक भोग जन्नत में स्वर्ग भोग पाये।। 546
जहन्नम भोग हर परिस्थिति में दुख व कष्ट होये।
जन्नत भोग परिस्थिति वश सदैव सुख व शाँति होये।। 547
अपने अपने कर्म से जन जन्नत जहन्नम जरुर पाये।
जन्नत जहन्नम कर्मफल देने के लिये रब ने बनाये।। 548
रब के यहाँ न्याय होत पक्षपात नहीं चलत आये।
जहन्नम से बचने को जन नेक काम करत आये।। 549
नैतिक अनैतिक गुणों का प्रकृति ने किया निर्माण बराबर।
कोई नैतिक गुण अर्जित करे कोई अनैतिक का अंबार।। 550
नैतिक अनैतिक गुणों का सृष्टि में है भण्डार बराबर।
देव दानव दोनों बनाया ईश्वर की लीला है अपरंपार।। 551
दिन रात घंटे बड़े साल में योग होय बराबर।
जब अनैतिक लोग बढ़े धरा में युद्व करें बराबर।। 552
सवा लाख देवता विराजें गौ माता के तन पर।
एकऊ इनमें से ना बचाये जब कसाई चलाये खंजर।। 553

गौ माता रही आँसू बहाये कोई ले मुझे बचाये।
गौ माता की जय बोलने वाले कोई नहीं बचाये।। 554
दूध घी खोवा मलाई खाने वाले सबकोई भूल गये।
दूध देना बंद करे गाय कसाईयों का बेच दिये।। 555
जग में जो प्राणी दूध पिलाये माँ सम कहलाये।
गाय में भी ममता बछड़े को प्यार करती आये।। 556
माँ तो महतारी होती बकरी भैंस भी माँ आये।
महतारी हत्या को बंद करें माँ भी समृद्वि बढ़ाये।। 557
चाकू चले जब किसी प्राणी पर दर्द से चिल्लाये।
दर्द दें किसी प्राणी को यह मानवीयता न कहायें।। 558
संपत्ति से बड़ा सुख सुख से बड़ा संतोष कहायें।
संपत्ति सुख संतोष एक दूजे के पर्याय ना कहाये।। 559
जिसके पास रोटी कपड़ा मकान है तो सुख आये।
सुख के साथ मन में शाँति व संतोष कहाये।। 560
वायु अग्नि जल सामान्य है तो वातावरण शाँत आये।
वातावरण में शाँति होये तो मन में शाँति आये।। 561
मन शाँति के लिये वातावरण में शाँति जरूरी बनायें।
वातावरण की तरंगे मानव मन पर अपना प्रभाव दिखायें।। 562
अधिक आवृति की तरंगों से तंत्रिका तंत्र कँप जाये।
तंत्रिका तंत्र का अधिक कंपन हृदय गति को बढ़ाये।। 563
हृदय गति बढ़ते मन की शाँति भंग होती जाये।
मन की शाँति भंग मतलब अशाँत मानव मन आये।।564
अशाँत मन एक तरह का नारकीय जीवन कहा जाये।
जो समाधि की संतति उनका मन ही अशाँति पाये।। 565
बहुधा शाँति के लिये मानव वन में चला जाये ।
मानव मन को शाँति जनहीन वन में मिलत आये।। 566
मानव मन को शाँति फकीरी में भी मिल जाये।
शाँति के लाने अमीरी व फकीरी एक बराबर आये।। 567

शाँति मिले फकीरी में बावरा अमीरी के पीछे जाये।
किसी के पीछे भागने वाला पिछलग्गू ही माना जाये।। 568
शाँति की अवस्था आत्मा के लिए सरल नहीं आये।
सुख दुख रहित शारीरिक मन स्थिति ही शाँति आये।। 569
शाँति की अवस्था में काया को आराम मिल जाये।
आराम की अवस्था से काया फिर ऊर्जावान हो जाये।। 570
सुख या दुख भोगते भोगते आत्मा ऊर्जावान हो जाये।
जैसे मनुष्य शारीरिक श्रम करते से ऊर्जावान हो जाये।। 571
दुख सुख रहित अवस्था में ही शाँति मिल पाये।
संभोग की संतान ही शाँति की अवस्था को पाये।। 572
भय व शाँति एक दूसरे अनुक्रमानुपातिक ही कहे जाये।
मन में भय बढ़ता तो शाँति कम होती जाये।। 573
दूसरे प्राणियों में बैरियों का भय दिन रात सताये।
मानुष अपने घर के अंदर सदा भयरहित रहो आये।। 574
निर्भय वही रहे जिसकी आत्मा के साथ पुण्य आये।
और वफादारी से अपने दायित्व का पालन करत आये।। 575
मानुष सब जानत है शाँति का विलोम अशाँति आये।
अशाँति मन की या वातावरण की नुकसान करत आये।। 576
नुकसान नुकसान है चाहे जन धन मन का होये।
जन धन नुकसान का प्रभाव मानुष मन पर होये।। 577
जग में वन के नुकसान से वैश्विक गर्मी आये।
वैश्विक गर्मी से पूरे जग के लोग रहे घबड़ाये।। 578
ग्रीन हाउस गैसे बढ़ें हवा में जलवायु परिवर्तन लायें।
पाप बढ़ें जग में समय समय पर युद्व करवायें।। 579
जब लड़ाई होत जग में रणभूमि में खून बहायें।
कुछ ही दिन में कोटि महिलायें विधवा हो जायें।। 580
वन क्षेत्रफल का वैश्विक गर्मी में सीधा संबंध आये।
जितना वन नाश होवे उतनी वैश्विक गर्मी बढ़ जाये।। 581

लंबे समय तक वैश्विक गर्मी युग परिवर्तन दे करवाये।
युग परिवर्तन में अधिकाँश वनस्पति व जन्तू बदल जायें।। 582
ऐसे मानुष का अशाँत मन युग परिवर्तन दे करवाये।
युग परिवर्तन के समय अपार सम्पदा नष्ट हो जाये।। 583
सम्पदा के अर्तगत जीव तथा अजीव दोनों आ जायें।
समाधि की संतान ही प्राकृतिक सम्पदा का नाश कराये।। 584
युग परिवर्तन के काल भौगोलिक स्थिति भी बदल जाये।
अभी जहाँ पर जमीन है वहाँ समुद्र बन जायें।। 585
समुद्र की जगह पर ऊँचे नीचे जंगल बन जायें।
विश्व की जैव विविधतता में भी परिवर्तन आ जायें।। 586
मनुष्य की हजारों साल की मेहनत पानी में जाये।
बहुत सी जातियाँ सदा के लिये विलुप्त हो जायें।। 587
युग परिवर्तन को ही पृथ्वी पर प्रलय कहा जाये।
प्रलय का वर्णन हिन्दू धर्म ग्रन्थों में पाया जाये।। 588
प्रलय के समय मनुष्य की अधिकांश आबादी मर जायें।
जो संपति मानुष ने जोड़ा सब यही रही जाये।। 589
पाँच तत्व की काया पंच तत्व में मिल जाये।
काया छोड़ आत्मा फिरसे नई काया में चली जाये।। 590
काया माया जल्दी नाशवान पाप पुण्य संचय हो जाये।
पाप पुण्य धीरे क्षय होये कई जन्म तक जाये।। 591
पाप पुण्य के आधार पर आत्मा नई काया पाये।
विविधता कोई सर्वगुण संपन्न कोई विपन्न जग में आये।। 592
शरीरंग जब तक चलता है अस्तित्व का महत्व है।
जग में अधिक भार उसका जिसका अधिक घनत्व है।। 593
आकाश की तुलना में पृथ्वी का अधिक घनत्व है।
इसलिए आकाश की बजाये पृथ्वी का अधिक मुरूत्व है।। 594
सम आकार वस्तु नीचे जल्दी जात जिसकी ज्यादा घनत्व ।
पाप से आत्मा भारी होत मतलब बढ़ जाता घनत्व ।। 595

बढ़ते पुण्य से आत्मा हल्की होय स्वर्ग ओर जाये।
इससे इस बात को बल मिलता नरक नीचे आये।। 596
शिक्षा जन धन का समयानुसार अलग अलग महत्व है।
भूखा बीमार समझ पाये धन का कितना महत्व है।। 597
काम पड़ अनपढ़ समझे शिक्षा का क्या महत्व है।
झगड़ा पर समझ आये तन का क्या महत्व है।। 598
तीनों गुण जिसमें हो समाज में उसका प्रभूत्व है।
प्रभु की विशेष कृपा पर मानुष का प्रभुत्व है।। 599
प्रभु की कृपा उसे प्राप्त होती जिसमें सत्य है।
संभोग की संतति चले राह जिस पर सत्य है।। 600
भयहीन त्यागी ही सत् के मार्ग पर चल पाये।
सुख की कामना वाला मानुष भयहीन न हो पाये।। 601
सुख की लालसा वाला सम्पत्ति वृद्धि में लग जाये।
समृद्ध मानुष को मरने में काफी डर लागत आये।। 602
डर जिसको सताये वह सत्य पर नहीं चल पाये।
जो सत्य छोड़े उसकों नरक मिलना पक्का हो जाये ।। 603
सत्य मेव जयते भारत देश का सिद्धाँत माना जाये।
सत्य की जय होती तो मानुष क्यों डर जाये।। 604
सत्य समझने में समझाने में कही कमी रह जायें।
इसलिए मानुष के मन में डर अंदर घुष जाये।। 605
जिसे डर सताये तो बिना मारे खुद मर जाये ।
बिना मारे जो मरे आत्म हत्या का पापी आये।। 606
आत्म हत्या करने वाला मानुष नरक में ही जाये।
नरक में जा पश्चाताप करें कछु ना होवे पछताये।। 607
नरक से बचने के लिए संघर्ष का रास्ता अपनाये।
संघर्ष का जीवन जिये अकाल मौत से बच जाये।। 608
घर का जोगी जोगिया आन गाँव में सिद्ध कहलाये।
सदियों से बुजुर्गो के अनुभव हमें ऐसा ही बताये।। 609

साधू रूप धरि रावण ने सिया को लिया चुराये।
नब्बे प्रतिशत चुरकट लोग समाज को रहे चुना लगाये।। 610
गेरूआ वस्त्र धारण कर कानून को रहे ठेंगा बताये।
गाँजा विक्री प्रतिबंधित है और साधू पिये चिलम जलाये।। 611
जो खुद त्याग नहीं कर सकते औरों को बताये।
त्याग करो नशा करना कानूनी व सामाजिक जुल्म आये।। 612
जुल्म करने वाले मंच से जनता को प्रवचन सुनाये।
सुरा सुदंरी का सेवन समाजिक व अध्यात्मिक बुराई आये।। 613
बहुत से मठाधीशों को सुदंर शिष्यायें ही रास आये।
शिष्याओं को सेविका बना उनसे अपनी सेवा रहे कराये।। 614
जगत में ऐसे अधिकाँश ढ़ोंगी बाबा समाधि संतान कहाये।
बिरले मिलत सच्चे बाबा जो संभोग की संतान आयें।। 615
खुद की नारी से परहेज करते परनारी परहेज नाये।
स्वनारी तज परनारी से बात करें मिलाये नजर मुस्कुराये।। 616
अपने घर की जबाबदारी जो पूरी नहीं कर पाये।
समाज का उद्धार करने चले माथे पर तिलक लगाये।। 617
खुद की नारी और संतति को समझ नहीं पाये।
पूरी समाज को मंच पर बैठकर रहे उपदेश सुनाये।। 618
आपन परिवार तज दूसर परिवार से रत हो जायें।
अपने से आसक्ति छोड़ दूसर से आसक्त हो जायें।। 619
विरक्त हो रक्त के रिस्ते छोड़कर साधू हो जायें।
किन्तु धनवान होने की लालस को नही छोड़ पायें।। 620
परिवार से विरक्त होकर मठ से आसक्त हो जाये।
लखपति ग्रहस्थ से साधू होने पर करोड़पति हो जाये।। 621
मठाधीशों के पास हजारों करोड़ों की सम्पत्ति पाई जाये।
त्याग के लिये साधू बने पर रोज मलाई खायें।। 622
मलाई मेवा खा खाकर साधू संत लाल हो जायें ।
गेरूआ वस्त्र काया की लालिमा और भी बढ़ाये।। 623

पेट की परवाह धन की परवाह से अलग कहाये।
जरूरत का धन संतोष उससे ज्यादा का असंतोष लाये।। 624
जिसके मन में असंतोष हो वह साधू नहीं कहाये।
संभोग से उत्पन्न संतति ही संतोष प्राप्त कर पाये।। 625
असंतोष प्रभु की भक्ति में एक बाधा मानी जाये।
असंतोष आत्मा और आत्मा का संबंध को दे मिटाये।। 626
जैसे एक दूरभाष का संबंध दूसरे से कट जाये।
वैसे ही आत्मा का संबंध आत्मा से कट जाये।। 627
नर की सेवा नारायण की सेवा ही मानी जाये।
कौन पुण्यात्मा व कौन पापात्मा समझ में सरल नाये।। 628
मनुष्य अपने कर्म के कारण घोर पीड़ा में जाये।
कभी कभी मनुष्य दूसरे के द्वारा भी कष्ट पाये।। 629
पापी आत्मा को दण्ड देना परमात्मा का काम आये।
पर पीड़ित आत्मा की सेवा मनुष्य का कर्त्तव्य आये।। 630
सेवा परमात्मा के काम में बाधा नहीं कही जाये।
परमात्मा का व मनुष्य का अलग अलग कर्त्तव्य आये।। 631
परमात्मा दण्ड दे किन्तु सेवा मनुष्य का काम आये।
घर में पिता लड़के को डांटे लेकिन महतारी मनाये।। 632
पीड़ित प्राणी की सेवा से मोह भंग हो जाये।
मोह नशा भंग होते ही मनुष्य निडर हो जाये।। 633
निडर मनुष्य में सच्ची सेवा भावना मन में आये।
सच्ची सेवा से मनुष्य भवबंधन से मुक्त हो जाये।। 634
भवबंधन से मुक्त मनुष्य की आत्मा स्वर्ग में जाये।
स्वर्ग का अधिकारी वही होवे जो संभोग से आये।। 635
जगत में प्राणियों की सेवा दो प्रकार की आये।
एक में सम्पदा खर्च होवे और दूसर में नाये।। 636
धन खर्चवाली सेवा में पुण्य दो गुना जुड़ जाये।
सेवा स्वार्थहीन हो तो सोने में सुहागा हो जाये।। 637

बिना सम्पदा खर्च वाली सेवा कोई भी कर पाये।
सेवा करते समय शरीर की मेहनत भी हो जाये।। 638
शारीरिक श्रम से मनुष्य की शुगर नियंत्रण में आये।
संतुलित शुगर वाला मनुष्य हृदय रोग से बच जाये।। 639
हृदय रोग से बचने पर मनुष्य चिंतामुक्त हो जाये।
चिंता मनुष्य को जीवित में ही चिता में जलाये।। 640
चिंता से मनुष्य की विचार शक्ति कमजोर हो जाये।
विचार शक्ति क्षीण होने पर मनुष्य बुद्धिहीन हो जाये।। 641
बुद्धिहीन मनुष्य अनैतिक व अधर्म कामों में लग जाये।
अनैतिक व अधर्म कामों से मनुष्य पाप कर जाये।। 642
पाप करने पर मनुष्य नरक का भागीदार हो जाये।
प्राणियों की सेवा मनुष्य को नरक जाने से बचाये।। 643
संभोग की संतान ही नरक जाने से बच पाये।
इस लोक में और स्वर्ग में सुख भोग पाये।। 644
जो नारी को सम्मान दे भले स्वर्ग ना जाये।
बिना स्वर्ग के संसार में स्वर्ग सम सुख पाये।। 645
प्रत्यक्ष को छोड़ अप्रत्यक्ष को चाहे मूढ़ मन कहाये।
मूढ़ हाथ की बिल्ली छोड़ मियूँ मियूँ कर बुलाये।। 646
नर और नारी में समानता जहाँ पर पाई जाये।
वहाँ घर अपने आप ही स्वर्ग समान बन जाये।। 747
कहीं कहीं पर बहुत बड़ी विडम्मना भी पाई जाये।
नारी दीमक रानी जैसे नर पर अपना हुक्म चलाये।। 648
ऐसी स्थिति में मानुष घर दीमक घर बन जाये।
मनुष्य योनि भी दीमक योनि के समान हो जाये।। 649
ऐसी स्थिति में नर का जन्म नरकावस्था हो जाये।
नर नारी का मात्र गुलाम बनकर ही रह जाये।। 650
सेवा और गुलामी के बीच बहुत बड़ा अंतर आये।
अपनी मर्जी से किया गया परोपकार सेवा कहा जाये।। 651

दूसरे की मर्जी से किया गया काम गुलामी आये।
नौकरी में पगार मिले गुलामी में नहीं मिलती आये।। 652
दीमक नर को नौकर नहीं गुलाम ही कहा जाये।
नरक का जीवन गुलामी का जीवन एक समान आये।। 653
सृष्टि में आत्मा बड़ी मुश्किल से मानव बन पाये।
लेकिन दीमक रानी नर का जीवन नरक दे बनाये।। 654
सदियों पुरानी कहावत पर बात आकर फिर रूक जाये।
चाहे शादी करे अथवा ना करे दोनों में पछताये।। 655
अपनी नारी को जो प्रताड़ित करे मनुष्य तन पाये।
अगले जन्म में रानी दीमक का गुलाम बन आये।। 656
दीमक रानी दीमक नर से अपना काम ले कराये।
नर से सहवास करे और उसे मारकर खा जाये।। 657
कुछ मनुष्यों के परिवार में भी यही स्थिति आये।
मनुष्य योनि में ही दीमक योनि का फल पाये।। 658
दीमक समाज में दीमक रानी का राज चलता आये।
एक दीमक रानी सभी दीमक नर पर हुक्म चलाये।। 659
जोरू का गुलाम जोरू आदेश का दर्द जानत आये।
नारी की सलाह से घर स्वर्ग समान हो जाये।। 660
नारी की सहमति से नर कछु कष्ट नहीं पाये।
बिन नारी सहमति के चैन से सो नहीं पाये।। 661
इतने में ही सहमति का सार समझ में आये।
नारी की सहमती धरा को जरूर स्वर्ग दे बनाये।। 662
जो कुछ दूसरों को दे दिया वह दान कहलाये।
त्याग में उपयोग छोड़ दिया जो अपने पास आये।। 663
जीने के लिए जितना जरूरी है उतना ही खाये।
यह मन और जीभ इंद्रिय का त्याग कहा जाये।। 664
अति भोजन का त्याग कई बीमारियों से ले बचाये।
अति बोलने का त्याग कई लड़ाइयों से हमें बचाये।। 665

संतान उत्पत्ति के लिए जरूरी सहवास ही किया जाये।
अति सहवास से हार्मोंस का संतुलन गड़बड़ हो जाये।। 666
शवासन में जो मनुष्य जाये सहवास इच्छा मर जाये।
लंबी साँस जो लेवे काम इच्छा नहीं रह पाये।। 667
कम में आत्मसंतोष करे तो भी त्याग कहा जाये।
अपनी नारी में संतोष करे यह भी त्याग आये।। 668
जैसे कपड़ा त्यागने से मानव तन हल्का हो जाये ।
वैसे त्याग से मनुष्य की आत्मा हल्की हो जाये।। 669
वजन में हल्की आत्मा ही स्वर्ग दिशा जा पाये।
हल्की चीज ऊपर की ओर आसानी से उठ जाये।। 670
पाप घटत आत्मा से आत्मा हल्की हो ऊपर जाये।
जो संभोग की संतान होती वही स्वर्ग को पाये।। 671
सत्यवान को यम दूतों से सावित्री ने लिया छुड़ाये।
सती सावित्री की कथा आप अच्छे से जानते आयें।। 672
परनारी का त्याग ही समाज में सतीत्व ले आये।
सतीत्व अकेले ही आत्मा को स्वर्ग तक ले जाये।। 673
सतीत्व से नर नारी के बीच सामंजस्य बन जाये।
नर नारी के बीच सामंजस्य सुख में बदल जाये।। 674
सुख की लालसा में मनुष्य स्वर्ग की लगन लगाये।
सतीत्व से सुख यहीं मिले तो स्वर्ग क्यों जायें।। 675
सतीत्व से सुख के साथ संतोष भी मिलत आये।
सतीत्व समाज में ऐसे चमके जैसे ध्रुव तारा आये।। 676
त्याग से स्वर्ग जैसे सुख संसार पर मिल जाये।
शारीरिक तप मानसिक सुख का पर्याय ही कहा जाये।। 677
मनुष्य को दान के बदले सदा दुआ मिलत आये।
दुआ को पुन्य का पर्याय शब्द भी कहा जाये।। 678
पात्र को दिया गया दान सफल दान माना जाये।
पात्र का मतलब जरूरतमंद सही इंसा ही निकाला जाये।। 679

दान कल्याणक होता है यदि कमाई ईमान की आये।
बेईमान की कमाई का दान पुण्य साथ ले जाये।। 680
हराम की कमाई करने वाले असंभोग की संतति आयें।
हराम के धन को कुछ समय बाद हरामी खायें।। 681
जेब के रूपये निकालने से जेब हल्की हो जाये।
पात्र को दान देने से आत्मा हल्की हो जाये।। 682
कामचोर दान के लिये सदा अपात्र ही कहा जाये।
दान के साथ दान देने वाले का पुण्य जाये।। 683
किसी हष्ठ पुष्ठ आदमी को दान ना दो भाई।
बोलो जाओ कही काम करो खाओ खुद की कमाई।। 684
दान देने से किये पापकर्म कम नहीं होने पायें।
पाप फल भोगना ही पड़ता है लाख करें उपये।। 685
जैसे जली लकड़ी राख और कोयला में बदल जाये।
राख फिरसे कभी बिना जली लकड़ी न बन पाये।। 686
वैसे कोई किया हुआ अनैतिक काम पाप बन जाये।
पाप बन चुका काम कभी नैतिक नहीं हो पाये।। 687
धारणा सही नहीं दान से पाप का ब्याज जाये।
त्याग से मानुष पाप का मूल भी मिट जाये।। 688
एक बार गेहूँ को पीसकर आटा बना दिया जाये।
तो कोई आदमी आटा से गेहूँ नहीं बना पाये।। 689
वैसे ही यदि कोई गलत काम पाप बन जाये।
तो कोई कद्दावर पाप को पुण्य नहीं बना पाये।। 690
चोरी शब्द अलग है दान नहीं है उसका पर्याये।
चोरी चोरी है वह कभी भी दान नहीं कहलाये।। 691
काम या दान की चोरी करने वाला चोर कहलाये।
चोरी का धन दान के काबिल नहीं कहा जाये।। 692
दान देना कोई चाहे तो पहले इमानदार बन जाये।

स्वर्ग से पहले संसार में ईमान की कमाई खाये।। 693

घनत्व का सीधा संबंध वस्तु के भार से कहाये।

भार का सीधा संबंध गुरूत्व से है एरिक बताये।। 694

नरक में भारी आत्मा को खींचने का आकर्षण आये।

पाप कार्मों से आत्मा का भार भारी होता जाये।। 695

इसलिए आत्मा नरक के आकर्षण से नरक में जाये।

पाप फल भोगने के बाद आत्मा हल्की हो जाये।। 696

आत्मा हल्की होने पर नरक आकर्षण समाप्त हो जाये।

नरक आकर्षण से मुक्त हो आत्मा ऊपर आ जाये।। 697

अधिक पुण्य से आत्मा का भार कम होता जाये।

ऋण आकर्षण के कारण आत्मा स्वर्ग की ओर जाये।। 698

पुण्य फल भोगने से पुण्य का क्षय होता जाये।

पुण्य क्षय होने से आत्मा का भार बढ़ता जाये।। 699

आत्मा का भार बढ़ने पर आत्मा नीचे टपक आये।

स्वर्ग से टपकी आत्मा पृथ्वी पर फिर आ जाये।। 700

स्वर्ग में त्याग करनेवाली आत्मायें वहीं पर रह जाये।

त्याग के कारण आत्मा की यथास्थिति बनी रह जाये।। 701

यथास्थिति में आत्मा सुख दुख से परे रही आये।

सुख उपभोग ना करने पर यथास्थिति बनी रह जाये।। 702

पापी को दान देनेवाला दाता भी पापी हो जाये।

पुण्य बँटता जैसे किसी थाली का भोजन बँट जाये।। 703

जो पुण्य आत्मा हो वह दान कभी नाहीं मंगाये।

क्योंकि पुण्यात्मा को दान मॉगने की नौबत ना आये।। 704

दीन हीन की थोड़ी मदद करना मानुष कर्त्तव्य आये।

पापी मनुष को दान देना पाप श्रेणी में आये।। 705

आपके दान से कई लोग गाँजा भाँग पीते आयें।

दान के दाम से बहुत लोग मुर्गी काटते आयें।। 706

मुर्गी जो चिल्लाये पाप आपके खाते में भी जाये।

क्योंकि मुर्गी काटने का दाम आपके पास से जाये।। 707
दान देनई पड़े तो एक मुठ्ठी दाना दिया जाये।
एक एक मुठ्ठी दाना से काफी दाना हो जाये।। 708
यह तो अन्याय आप कमायें दूसरा बैठे बैठे खाये।
भिखरी की दुआ लगे तो भिखारी मालामाल हो जाये।। 709
दान देना सोच समझकर अन्यथा दान पाप हो जाये।
जानकारी की कमी से पुण्य करत पाप हो जाये।। 710
मानुष अपना कर्मफल पाये मानुष की मदद फर्ज आये।
जो काम करने लायक नाहीं उसकी मदद की जाये।। 711
दान का भण्डार अलग रखें उससे थोड़ा दिया जाये।
अन्यथा जादूगर दान के दाना से भण्डार लें उड़ाये।। 712
चलित फोन मानुष आत्मा सम उपग्रह नारायण सम आयें।
नर कुछ भी बात करते नारायण के पास जाये।। 713
अलग अलग कंपनी के मीनार जगह जगह पाये जायें।
जिस कंपनी का सिम संबंध उसी मीनार से आयें।। 714
सभी कंपनियों के मीनारों का संबंध उपग्रह से आये।
सभी उपग्रहों का संबंध वायू की तरंगों से आये।। 715
इसलिये सृष्टि में नारायण से कुछ छिपत नहीं आये।
छिपान की कोशिष लाख करे पर छिप नहीं पाये।। 716
जैसे चलित दूरभाष से खबर उपग्रह तक चली जाये।
वैसे नर के कामों की खबर नारायण तक जाये।। 717
आप अकेले में अथवा अंधेरें में इसे लो अजमाये।
चलित दूरभाष से बात करो तो गंतव्य तक जाये।। 718
जैसे चलित दूरभाष की बात दूसरे तक पहुँच जाये।
लेकिन जाती हुई बात हमें आखों से नहीं दिखाये।। 719
वैसे मनुष्य को पाप पुण्य नारायण तक चले जायें।
लेकिन नारायण तक जाते हुए किसी को न दिखायें।। 720
दूरदर्शन के माध्यम से भी मैं इसे दूँ समझाये।

इंग्लेण्ड में चल रहा खेल भारत में दिख जाये।। 721
देखने के साथ हर पल की खबर सुन पायें।
तरंगों के माध्यम से ही यह संभव हो पाये।। 722
मन में जो विचार चले वो तरंग बन जायें ।
तरंग शरीर से बाहर निकलकर वायु में आ जायें।। 723
विचार वायु में संचरण करते हुए रब तक जायें।
रब खुदा ईश अल्लाह परमात्मा हरि सब एक आयें।। 724
विचार भी मनुष्य कर्म माना जाये जरूर माना जाये।
विचार की तरंगे भी वायु तरंगों से मिल जायें।। 725
मनसा वाचा कर्मणा का अर्थ मेरी समझ में आये।
विचार यदि मुख से निकल जाये तो वाचा आये।। 726
वाचा का अर्थ हिन्दी शब्दकोष में बचन से आये।
वचन भी मनुष्य द्वारा किया गया कर्म बन जाये।। 727
किसी को अपशब्द कहने से वह दुखी हो जाये ।
वाचा जो किसी को दुख पहुँचाये पाप कहा जाये।। 728
मधुर वचन बोलत में कछु कर नहीं लागत आये।
मधुर वाणी सुनकर दुखी का दिल खुश हो जाय।। 729
झूठ वचन धोखा होता जो पाप श्रेणी में आये।
वायु तरंग के माध्यम से हरि तक पहुँच जाये।। 730
शब्दकोष में कर्म का मतलब काम और भाग्य आये।
काया अंगो से किया गया काम कर कर्मणा आये।। 731
मनसा का शब्दकोष में अर्थ मन के द्वारा आये।
कर्मणा के लिए शब्दकोष में अर्थ कर्म द्वारा आये।। 732
मन में जो विचार आये विचार कर्म बन जाये।
तन बिसार ध्येय के अनुसार पाप पुण्य बन जाये।। 733
संभोग से उत्पन्न संतान में सदा शुभ विचार आयें।
मनुष्य के शुभ विचार मनुष्य से शुभ कार्य करवायें।। 734

पीड़ित मानव की मदद करे वो मानवता में आये।
मुशीबत में जो मदद करे नर नारायण दूत कहाये।। 735
प्यास से जब किसी जीव की जान लगभग जाये।
एक घूँट पानी मरते हुए की जीवन ले बचाये।। 736
बिना वायु के प्राणी कुछ पल ही जीवन पाये।
जल वायु आग को संसार में देवता माना जाये।। 737
आग पकाये पाक कच्चा भोजन मानुष नहीं खा पाये।
जीवन देने वाले तत्वों को सबके द्वारा पूजा जाये।। 738
सूर्य से सात रंगों की किरणें धरा पर आयें।
अब कुछ बाते रंगों की भी कर ली जायें।। 739
लाल रंग से लाल किरणें परावर्तित सदा हो जायें।
लाल रंग के आलावा सभी किरणें अवशोषित हो जायें।। 740
दोनों भौहों के बीच लाल रंग की बिंदिया लगायें।
परावर्तित लाल रंग की किरणें मजनू नजर से बचायें।। 741
महिलाओं के माथे सिंदूर का कारण भी यही आये।
किसी शोहदे की नजर महिला से ना मिल पाये।। 742
हनुमान पहुँचे अशोक वाटिका सीता को जानने के लिये।
सीता ने सिंदूर लगाया सुंदरियों से बचाने के लिये।। 743
दोनों भौहों के बीच चमकती लाल बिंदी जो लगाये।
किसी की भी नजर लड़की से नहीं टकरा पाये।। 744
नजर नहीं मिले तो आशिकी बीमारी पास नहीं आये।
प्रेम रोग से बची लड़की पति का प्यार पायें।। 745
जिस नारी को अपने पति का प्यार मिल जाये।
उस नारी को यह संसार ही स्वर्ग बन जाये।। 746
त्याग भी एक उत्तम मार्ग स्वर्ग पाने के लिये।
घर स्वर्ग तो जरूरत नहीं ऊपर जाने के लिये।। 747
बचपन में बिंदिया ना लगाये तो जीवन में पछताये।

थोड़ी सी नादानी पर्याप्त कलंकित जीवन करके ही जाये।। 748
चुनरी ओड़ो बिंदिया लगाओ अपना चरित्र बचाने के लिये।
वरना एक भूल पर्याप्त सदा सिर झुकाने के लिये।। 749
सिर झुकाकर वही जीते जो असंभोग की संतान आयें।
सिर उठाकर वही जियें जो संभोग की संतान आयें।। 750

शायद फेरोमोंस हार्मोंस लाल रंग से निष्क्रिय हो जायें।
हारर्मोंस का ही कमाल है जो काम वासना जगायें।। 751
शरीर में कुछ ग्रथिंयाँ काम हार्मोंस उत्पन्न करती आयें।
कुछ हार्मोंस प्राणी के शरीर से बाहर आ जायें।। 752
शरीर के ताप से वाष्पित हो वातावरण में जायें।
सांस से मानुष्य के शरीर में प्रवेश कर जायें।। 753
कुछ हार्मोस मानुष की आँखों में भी घुल जायें।
हार्मोंस तंत्रिका तंत्र को प्रभावित कर काम काम जगायें।।754
इस प्रकार काम हार्मोंस अपना प्रभाव मानुष पर दिखायें।
नई पीढ़ी की कछू महिलायें माँग नहीं भरती आयें।। 755
अगर माँग भर भी लेंती अपने बालों से छिपायें।
माँग छिपाने का मतलब सभी की समझ में आये।। 756
मतलब कोई युवा देखे तो उसके पीछे चला आये।
पर नर को रिझाने का मतलब साफ नजर आये।। 757
समझो माँग छुपाने वाली महिला मूर्ख बेवफा समझ आये।
समझो ऐसी बेवफा महिला संभोग की उत्पत्ति नहीं आये।। 758
बुजुर्गो ने अनुभव किया और नाक कान दिया छिदाये।
नाक कान छेदन से महिलाओं का क्रोध कम जाये। 759
नाक कान छेदन का संबंध तंत्रिका विज्ञान से आये।
महिलाओं के शाँत स्वभाव से घर में शाँति आये।। 760
यदि फूली रोटी में छेद करो तो जल्दी ठण्डाये।
तस ही नाक कान छिदी महिला की गुस्सा आये।। 761

अपने परिवार में जो कोई भी शाँति चाहत आये।
तो घर की महिलाओं की नाक कान दें छिदाये।। 762
अगर बहस में एक पक्ष शीध्र शाँत हो जाये।
तो दूसरा पक्ष भी अपने आप शाँत हो जाये।। 763
सब जानते नारी समाज जन्मजात श्रंगार प्रिय कही जाये।
नाक कान के आभूषण अपने पिता से ले बनवाये।। 764
शादी में वधू को मोटी टोडर बिछिया दें पहनाये।
आभूषण का काम शोभा साथ शक्कर एकुप्रेसर से आये।। 765
बिछिया अंगुली में दबाओ दे तो चाल बढ़ जाये।
तेज चाल से बहू जल्दी जल्दी काम करती आये।। 766
टोडर पहननें से बहू का वजन नहीं बढ़त आये।
बहू पतली रहे तो सुंदर क्रियाशील बनी रहत आये।। 767
टोडर का वजन ढोत ढोत शुगर कम हो जाये।
ऐसी महिला शुगर और हदय रोग से बच जाये।। 768
कुछ नारी को कमर में डोरा भी लोग पहनाये।
नारी के कमर में डोरा कमर बेल्ट बन जाये।। 769
कमर बेल्ट कसने से काया में कसावट आ जाये।
काया में कसावट आने से कुछ ताकत बढ़ जाये।। 770
शरीर में ताकत बढ़ने से रोग प्रतिरोधी क्षमता आये।
रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़ने से नारी निरोगी रही आये।। 771
आभूषण से नारी में निरोगी काया का गुण आये।
घर में निरोगी नारी से निरोगी संतान घर आये।। 772
पहला सुख निरोगी काया वाली कहावत काम आ जाये।
नारी की शोभा घर में शाँति और सुख लाये।। 773
जस श्रंगार से नारी शाँति का सीधा संबंध आये।
तस संभोग की संतान का शाँति से संबंध आये।। 77
मानुष के मनोरंजन व मनोभंजन में काफी अंतर आये।
मनोरंजन में मान मर्यादा में मानुष मन रंजन पाये।। 775

मन रंजन हो किसी का मन खण्डन ना होय।
मनोभंजन में किसी न किसी का मन भंजन होय।। 776
अपने रंजन के लिए दूसरे का भंजन पाप आये।
दूसरे को भंजन से बचायें संभोग की संतति पाये।। 777
मन किसी का टूटे तो उसकी हिम्मत टूट जाये।
महाभारत युद्ध में द्रोण का एक उदाहरण पाया जाये।। 778
धर्मराज के अस्पष्ट वचन सुन द्रोण मन टूट जाये।
मन के टूटने पर धनुष हाथ से गिर जाये।। 779
फिरसे धनुष उठाने की हिम्मत द्रोण नहीं कर पाये।
मौका देख अर्जुन ने तीर चलाये द्रोण प्राण गँवाये।। 780
अभिमन्यु की मौत के प्रतिशोध में धनुर्धर थे बौखलाये।
द्रोण हथियार उठाये अर्जुन इतना समय नहीं दे पाये।। 781
क्रिया की प्रतिक्रिया का यह एक नमूना ही आये।
निहत्थे अभिमन्यु पर द्रोण ने भी अनीति वाण चलाये।। 782
अनीति का साथ दे अजेय नर द्रोण मर जाये।
अनीति से जो मारे अनीति से वह मारा जाये।। 783
राह पर बहेलिये ने छिपकर अर्जुन पर वाण चलाये।
हारकर अर्जुन ने अपने साथ की गोपियाँ भी लुटवाये।। 784
बहेलिए कायर होने के कारण आदर्श पुरूष ना कहाये।
पर नारियों पर अधिकार जमा निम्न दर्जा के कहाये।। 785
उच्च श्रेणी पाने के लिए नीति कर्म जरूरी आये।
अनीति और ऊपरी दर्जा साथ अधिक ना चल पाये।। 786
शक्ति क्षय होते ही कलंक को इतिहास दे बताये ।
नीति पुरूष वही है भावी पीढ़ी जिसके गुण गाये।। 787
नर के सर में भेजा बायें तरफ ज्यादा आये ?
इसके उल्टा नारी में भेजा दायें तरफ ज्यादा आये ? 788
नर बायें करवट सोय ज्यादा दिमाग में खून जाये।
एक फायदा और बायें करवट काम वासना कम सताये।। 789

आँत का संग्रहण भाग भी बायें तरफ पाया जाये।
बायें करवट सोने से भोजन अच्छे से पच जाये।। 790
बावरे बायें करवट सोने से काम वासना कम सताये।
इसलिए मानुष के लिए संभोग का अवसर बढ़ जाये।। 791
दायें करवट सोने से संयम महा मुश्किल हो जाये।
इसलिए मानुष असंभोग करने के लिए विवश हो जाये।। 792
नारी इच्छा बिना किया गया मैथून असंभोग कहा जाये।
असंभोग से जन्मी संतान को अपूर्ण ही कहा जाये।। 793
अपूर्ण संतति का विकास ही पूर्ण नहीं हो पाये।
पूर्ण विकसित संतति में मानसिक व शरीरिक दोनों आयें।। 794
मानसिक रूप से विकसित संतति को मेधावान कहा जाये।
शरीरिक रूप से विकसित संतति को पहलवान कहा जाये।। 795
जो नर मानसिक शरीरिक रूप से विकसित हो जाये।
वो नर समाज में सोने पे सुहागा कहा जाये।। 796
अस तन मानुष पिछले जन्मों के पुण्य से पाये।
जिसके घर में जन्म ले वह धन्य हो जाये।। 797
पूर्ण विकसित मानुष अपनी दम पर धनवान हो जाये।
धन से नेक काम करके संसार यश को पाये।। 798
बलात्कार समाजिक नजर में बहुत ही अधम काम आये।
आध्यात्मिक नजर में भी बलात्कारी नर्क का धाम जाये।। 799
किसी से कुछ छीन लेना भी बलात्कार माना जाये।
जबरन मैथून करना भी बलात्कार के दर्जा में आये।। 800
अब नारी को भी नर समान मानुष माना जाये।
नारी को भी सब समानता का अधिकार दिया जाये।। 801
बराबर की सोच से संभोग पुण्य काम माना जाये।

संभोग की संतान नर नारी को समान मानत आये।। 802

सुलक्षणा नारी अपने नर पर कभी हाथ ना उठाये।

संभोग से जन्मी नारी नर को कभी ना सताये।। 803

बात बात पर नर नारी बीच विवाद हो जाये।

कभी मजाक में होत तो कभी सच में आये।। 804

मजाक के विवाद में दंपत्ति तनाव मुक्त हो जाये।

सच के विवाद में दोनों की शाँति खो जाये।। 805

दंपत्ति के बीच अशाँति अशाँति को और भी बढ़ाये।

अशाँति से दंपत्ति का जीवन पूरा नरक बन जाये।। 806

कविता जहाँ से शुरू हुई वहीं पर आ जाये।

जस धरा धुरी पर चले रात दिन बन जाये।। 807

असंभोग क्रिया से बचने का एक रास्ता समझ आये।

लंबी साँसे छोड़ें या शवासन मुद्रा में लेट जायें।। 808

मैथून पशु और पक्षी भी करें सही समय आये।

वे जानते मैथून बच्चा पैदा करने को किया जाये।। 809

गर्भवती मादा से पशु पक्षी मैथून नहीं करते आयें।

संगम के बारे में मानुष से अधिक समझदार आयें। 810

सहवास संबंध में मानुष पशु पक्षी से नीच आयें।

गर्भवती नारी से जबरन मैथून करते नर ना शमार्यें।। 811

यह सच यह नीच काम से मानुष नीच कहलाये।

वर्ण चाहे कोई भी हो नीच काम नीच आये।। 812

नीच काम के लिए शिक्षा का कोई संबंध नाये।

पढ़े लिखे लोगों को संयमी समझ लोग धोखा खाये।। 813

कभी कभी तो पढ़े लोगों के ऐसे नजारें आयें।

कुलपति भी कुकर्मी दुष्कर्मी की श्रेणी में आ जाये।। 814

बल की अति से किया गया कार्य बलात्कार्य आये।

नारी की सहमति के बिना मैथून बलात्कार्य माना जाये।। 815

बलात्कार का काम बलात्कार की संतान ही कर पाये।

संभोग से जन्मी संतान को बलात्कार रास ना आये।। 816

किसी की इच्छा बिना किया गया काम पाप आये।

कारण इससे एक मानुष की आत्मा दुखी हो जाये।। 817

दूसरे को दुख पहुँचाने वाला सुखी ना रह पाये।

क्रिया की प्रतिक्रिया का नियम प्रकृति का नियम आये।। 818

नारी जो नर को सुख देवे एवज सुख पाये।

जो नर नारी को दुख देवे बदले दुख पाये।। 819

हर नर कर्म फल भोगे कोई बच नहीं पाये।

चाहे राम हो या दशरथ सभी कर्म फल पाये।। 820

उपयोग और उपभोग में अंतर अधिक स्पष्ट दिखता आये।

उपयोग में पोषण और उपभोग में शोषण नजर आये।। 821

नारी को उपयोग की सहयोगी समझे तो पुण्य आये।

अगर उसे उपभोग का साधन समझे तो पाप आये।। 822

संतान उत्पत्ति का साधन समझें तो नर साधक आये।

भोग का साधन समझें तों स्वर्ग में बाधक आये।। 823

यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा एक कहावत आये।

फूँकने से ठण्डा गर्म और गर्म ठण्डा हो जाये।। 824

मुँह की भाप वही है लेकिन परिस्थित बदल जाये।

उसी से ठण्डा और उसी से गरम हो जाये।। 825

नर नारी दोनों को बराबर का दर्जा दिया जाये।

जस सायकल के दो चका एक स्तर सही आयें।। 826

पर पीछे के चका को महा महत्व दिया जाये।

पीछे के चका में मजबूत टायर को लगाया जाये।। 827

दोनों को बराबर का दर्जा देना अलग बात आये।

पर एक को अधिक महत्व देना मजबूरी बन जाये।। 828

कारण कमजोर टायर कैरियर का भार न सह पाये।

इसी तरह नारी समाज का कृत्य ना संभाल पाये।। 829

नारी पेंट कमीज पहनकर समाज में अगर आ जायें।

पर वह खड़े खड़े पेशाब कभी नहीं कर पाय।। 830

खड़े खड़े पेशाब करे उसकी पेंट गीली हो जाये।

प्रकृति की कृति के कारण यह कमजोर पक्ष आये।। 831

नर मातृत्व सुख पाना चाहे तब भी नहीं पाये।

हर नर का अपना नारी का अपना महत्व आये।। 832

कुछ को छोड़ प्राणियों में पुरूष प्रधान समाज आये।

इसलिए परिवार में पुरूष को अधिक महत्व दिया जाये।। 833

अगर नर नारी बीच खून की तुलना की जाये।

समान भार के नर में खून ज्यादा पाया जाये।। 834

मानव समाज के सही संचालन में भेजा चलाया जाये।

नारी को समाज में सम्मान समान दर्जा दिया जाये।। 835

नारी को कुछ कमजोर प्रकृति ने ही दिया बनाये।

ताकि नर सुरक्षित रहे नारी से मार नहीं खाये।। 836

दीगर प्राणीयों में भी ऐसी ही स्थिति देखी जाये।

मसलन बैल कुछ मजबूत होता कुछ कमजोर होती गाय।। 837

पशु प्रायः असंभोग क्रिया करते क्योंकि वे पशु आयें।

जो मानुष असंभोग क्रिया करते वे पशु तुल्य आयें।। 838

जग में असंभोग से पशु समान संतान समाज आये।

कर रही पशु समान संतान ही समाज में अन्याय।। 839

मानव समाज अगर चाहे समाज में हो सदा न्याय।

इस कारण असंभोग को छोड़ संभोग को लें अपनाय।। 840

समाधि में नर की चलती नारी की सहमति नाये।
संभोग में नारी नर का पूरा सहयोग करती आये।। 841
संभोग की संतान सदा बने अच्छा इंसान रीति आये।
संभोग ही करें जिनको भावी भारत से प्रीति आये।। 842

घर में बनायें एक पेग मधुशाला में नहीं पियें।

मधुशाला में झगड़ा के मौके हजार घर में पियें।। 843

सब लोग जानते मधु हानिकारक है स्वास्थ्य के लिए ।

शरीर से थके पीते हैं थकावट मिटाने के लिए।। 844

मन से थके पीते मानसिक आराम करने के लिए ।

अथके मानुष पीते प्याला आपस में लड़ने के लिए ।। 845

कुछ लोग पीते अपने हाजमा को सुधारने के लिए ।

असंभोग से जन्में शराबी समाज को बिगाड़ने के लिए।। 846

संभोग होता जरूरी समाज में सभ्य संतान के लिए ।

सब जानते हैं अति हनिकारक होता इंसान के लिए।। 847

स्टेरायड हार्मोंस जरूरी होता शरीर में बल के लिए ।

शरीर से बाहर कर देते लोग मनोरंजन के लिए।। 848

इसलिये कोई भी एक नशा जरूरी जीने के लिए ।

मानुष मजबूर हो जात कुछ मधु पीने के लिए।। 849

इश्क में जो टूटा पीता आशिकी भूलने के लिए ।

कभी कभी पुलिस पिला देती कुछ कबूलने के लिए।। 850

कभी लोग पी लेते समस्याओं से झगड़ने के लिए।

जब आशिक की हिम्मत नहीं होती पूछने के लिए।। 851

नीद नहीं आती तो परेशान पीते सोने के लिये ।

मन भारी होता तब लोग पीते रोने के लिये।। 852

सुख दुख में मद्यपान साथी होती सभी के लिए।

भले मानुष छोड़ दो मधु असंभोग सदा के लिए।। 853

प्रकृति ने गुदा बनाया है परवाना निकालने के लिए ।

लोग परवाना बोलते है पचे हुए खाना के लिए।। 854

नीच मानसिकता के समझते गुदा है मनोरंजन के लिये।

सुअरपुरूष की उपमा उचित है अस मनभंजन के लिये।।855

परवाना को बनाये खाना सुअर पेट भरने के लिए।

जहाँ परवाना होता वहाँ सुअर जाता भोजन के लिए।। 856

पागल सरकार ने मंजूरी दी मानुष कुकुर्म के लिए।

समलैगिकता कुकर्म है और आनंद मलिन मन के लिए।। 857

सनातन संस्कार बिगाड़ने नई पीढ़ी के मजा के लिए।

सही समाज तत्पर रहें विकृति से निपटने के लिए ।।858

परिणाम होंगे अधिक खराब आने वाली संतान के लिए।

ईश भय भरना होगा मासूमों की सुरक्षा के लिए।। 859

मृत्युदण्ड उचित है कुकर्म करने वाले दरिंदो के लिए।

समाज से समलैंगिता समाप्त होना चाहिए सदा के लिए।।860

वरना बहुत गदा चलेंगे समाज में गुदा के लिए।

मानसिक बीमारी मार देगी मानवता हमारी सदा के लिए।।861

यह बीमारी बने महामारी धरा में सदा के लिए।

उससे पहले समाप्त करना चाहिये इसे सदा के लिए।। 862

रब ने बनाया नर नारी सामाजिक सततता के लिए।

सजा मिलना चाहिए दरिंदों को उनकी खता के लिए।। 863

असंभोग से जन्म लेने विकृत सामाजिक प्रदूषण के लिए।

मानसिक प्रदूषण बहुत ही घातक होगा मानवता के लिए।। 864

संभोग की जरूरत आन पड़ी अब भविष्य के लिए ।

बीमारी का उन्मूलन हितकर होगा हम सभी के लिए।। 865

प्रकृति ने बनाया मानुष विषम लैंगिक प्रजनन के लिए।

प्रकृति से मानुष टकरा रहा अपने विनाश के लिए।। 866

कवि आपको वही बता रहा जो आप जानते आयें।

अक्षर शब्द वही जो पहाड़ा शब्दकोश में पाये जायें।। 867

अक्षरों व शब्दों के विन्यास से मतलब बदल जायें।

विचारों को समझने से मानुष के विचार बदल जायें।। 868

भटके को राह सही दिखाने का प्रयास एक आये।

लिखा तो सही है समझे जिसे जो समझ आये।। 869

संभोग और असंभोग अलग क्रियायें मानव समाज में आयें।

संभोग में दोनों की सहमति असंभोग में जबदस्ती आये।। 870

असंभोग में एक पक्ष बिनामर्जी खेले और हार जाये ।

कुछ घण्टों का खेलकूद कुछ मिनटों में निपट जाये।। 871

संभोग में आनंद मिलता है समाधी में परमानंद आये।

जो मानुष पोखर सागर में गोता लगाये गहराई बताये।। 872

असंभोग और संभोग में फर्स अर्स जस अंतर आये।

पहला पाप तथा दूसरा पुण्य इस संसार में कहाये।। 873

इस संसार में संभोग की जन कल्याण भावना आये।

जो नर नारी संभोग करें उत्तम समाज दें बनायें।। 874

उत्तम समाज से यह संसार स्वर्ग समान हो जाये।

आचार्य ओशो ने यही बताया कुछ लोग गलत बताये।। 875

जब मानुष मन संभोग से सारा सन्तृप्त हो जाये ।

तब बावरा मानव संसार से समाधि में रम जाये।। 876

अतृप्त मन पुनः शनैः शनैः संभोग की ओर जाये।

अतृप्त मानुष मन शाँति से समाधि ना लगा पाये।। 877

परनारी संभोग मृगतृष्णा आये जो कभी पूरी नहीं होए।

वर्षा ऋतु में भी पपीहा परिंदा प्यास प्यास रोए ।। 878

जहाँ में कोटि नारियाँ सब संग सहवास संभव नायें।

पर नारी सपनेहू ना हेरी वाली नियत को अपनायें ।। 879

आचार्य ओशो का विचार संभोग और समाधि यही आये।

बहुअति संभोग से मानुष का मन विरक्त हो जाये।। 880

मानुष मन में विरक्ति से मतलब नफरत हो जाये।

संभोग से नफरत होवे मानुष का कल्याण हो जाये ।। 881

मानुष के कल्याण के लिए समाधि अति जरूरी आये।

समाधि अवस्था मिलत ही समाज से मोह मिट जाये।। 882

अपनों से मोहमाया मिटते मानुष न्याय पथ पर जाये ।

न्याय का पथ स्वर्ग पथ कहलाये स्वर्ग तक जाये।। 883

इस संसार में त्यागी मानुष ही स्वर्ग पथ पायें ।

हम इस संसार में चपरासी पद मुश्किल से पायें।। 884

प्रथम दर्जा का पद पाना बहुत कठिन हो जाये।

तो सोचिये प्यारे स्वर्ग का पद आसान नहीं आये।। 885

संभोग और असंभोग को समझें संभोग को सब अपनायें।

संभोग और समाधि को समझें समाधि का पद पाये।। 886

जिस मानुष को समाधि मिल जाये उद्धार हो जाये।

समाधि वाले मानुष को धर्म से बहुत प्यार आये।। 887

असंभोग तज संभोग संभोग तज समाधी जो जन पाये।

उस जन का जीवन जग में सफल हो जाये।। 888

जग में सफल जीवन उसी जन का हो पाये।

यह उसी को मिले जो संभोग की संतान आये।। 889

जस किसी परीक्षा में पूरे विषयों में उत्तीर्ण होये।

तस आप जानतें परीक्षार्थी उस परीक्षा में उत्तीर्ण कहाये।। 890

एक भी विषय में यदि कोई परीक्षार्थी असफल होये।

तब वह परीक्षार्थी उस कक्षा में भी असफल कहाये।। 891

मानुष जन्म से मरण तक कई कर्म करने होये।

अर्थ काम धर्म मोक्ष चार पुरूषार्थ हिन्दु पंथ बताये।। 892

यहाँ काम को संभोग का समानार्थी ही समझा जाये।

शादी के बाद संतान पालना मानुष का पुरूषार्थ आये।। 893

संभोग सीमा संतान सृजन तक पुरूषार्थ ही कहा जाये ।

इससे ज्यादा संभोग नर नारी का स्वार्थ माना जाये ।। 894

परमार्थ का विरोधी स्वार्थ जो शोषण का पर्याय आये।

शोषक शोषण करता पोषक का शोषक एक परजीवी आये।। 895

परजीवी दूसरे जीव पर निर्भर स्वाधीन नहीं कहा जाये।

पराधीन सपने सुख नाहीं ऐसी एक लोक कहावत आये।। 896

लोग अपनी काया पर अपना शासन नहीं कर पायें।

ऐसे लोगों को इस संसार में गुलाम समझा जाये।। 897

मानुष गुलामी में बंधा और वह जन्नत आस लगाये।

गुलामी से टूट नहीं पाये मानुष जन्नत कैसे जाये।। 898

बिना ग्रहस्थ जीवन मानव जीवन सफल नहीं कहा जाये।

अपूर्ण जीवन जीने वाला बंदा समाज को उपदेश सुनाये।। 899

बृह्य ऋण से मुक्ति मानुष बृह्य यज्ञ कर पाये।

दो संतान पाले तो दो बृह्य यज्ञ बराबर आये।।900

समाज की सतत्ता में सहयोग करें बृह्या आशीष पायें।

असंभोग तज संभोग सीमित करें जीवन को सफल बनायें।। 901

ग्रहस्थ जीवन बिना मानव जीवन सफल नहीं हो पाये।

संतान पालकर पूर्ण ब्रह्मचारी बनें सृष्टि का आशीष पाये।। 902

ब्रह्मा का सहयोग करें संतान पालना सृष्टि सहयोग आये।

ब्रह्मचारी व पूर्ण ब्रह्मचारी मेरी नजर में अंतर आये।। 903

संभोग से नर नारी दोनों संतुष्ट होकर संतान दये।

संतान ईमान की कमाई से पालनेवाले इंसान बन गये।। 904

राम का इंसान जन्म मर्यादा कारण भगवान बन गये।

जो मानुष मर्यादा तोड़ते वे मानुष शैतान बन गये।। 905

मर्यादा के कारण मानुष पशु से भिन्न माना जाये।

मानुष मर्यादा तोड़े तो पशु से अभिन्न माना जाये।। 906

संभोग मानव करें असंभोग मानुष करें दोनोंा प्राणी आयें।

मानुष तन पाकर बहुजन खुद ही पशु बन जायें।। 907

परमात्मा ने मानुष बनाया मानुष खुद पशु बन गये।

किसी पशु को जन्नत नहीं मिलती बिना मानुष भये।। 908

मानुष का असंयम रोग व नरक का कारण आये।

संयम से सीमित संभोग मानव जीवन को सफल बनाये।। 909

काम काम पूरा करें अपने जीवन साथी के संग।

बहुत उकसाने वाले मिलेंगे बोलेंगे रंगजा जग के रंग।। 910

दुनिया बड़ी रंगीन रंग में अगर आप रंग गये ।

कुछ देर बाद पश्चाताप करेंगे लोक परलोक सब गये।। 911

अस जग में बाप करे पाप लड़का करे ऐआसी।

बाप घूष खाये पूतों के खातिर सजा रहे बाकी।। 912

पूत खा पीकर के मस्त भये ऊपर से ऐंड़ायें।

पाप जो करें वही भोगें बाप जहन्नम में जायें।। 913

बाप जाये नरक कोई भी पूत हाथ न लगाये।

बाप नरक में अपनी करनी पर खूब रोय पछताये।। 914

मानुष पेट के अंदर भोजन जाये बँट ना पाये।

इस संसार में दूसरे प्राणियों की बात दूसरी आये।। 915

पाप होत आत्मा से जुड़ जाये निकल नहीं पाये।

जब तक पाप फल देता नहीं आत्मा साथ कहाये।। 916

पाप भोगे पाप करने वाला तामें संतान ऐआसी पाये।

संतान ऐआसी करे पाप कराये बाप जो भोगत आये।। 917

घरवाले घूस कमीशन का माल खायें बाप पाप पाये।

बीबी खाये दाम और पाप बात अलग हो जाये।। 918

पागल नर दुनियाँ में घूष का बीबी को खिलाये।

कारागार की बात आये अधाँर्गनी घर में रही आये।। 919

जो नर घूष खाये घूष देनेवाले की आत्मा दुखाये।

क्रिया की प्रतिक्रिया से दुख के बदले दुख पाये।। 920

संभोग की संतान सदा भ्रष्टाचार से दूर रहती आये।

अंसभोग की संतति सदा घूष पाप समाज में बढ़ाये।। 921

असंभोग में जीवन साथी की आत्मा सदा दुखती आये।

असंभोग करनेवाला नर जग में सदा दुखी रहा आये।। 922

ऐसी क्रिया की प्रतिक्रियायें सृष्टि में सदा होती आयें।

समय संभलने का अंसभोग छोड़ संभोग में संतोष पायें।। 923

मेधावान जन संभोग में आनंद समाधि में परमानंद पायें।

सज्जन संभोग समाधि तज जग में समाधि ध्यान लगायें।। 924

दूसरे की पीड़ा वही हरता जो संभोग संतान आये।

असंभोग से जो संतति आय निर्दोष को भी सताये।। 925

कष्ट से नहीं डरना मानव कष्ट सहे पाप कटें।

कष्ट देनेवाले समय आये नरक में सड़े कष्ट सहें।। 926

बड़ी निदर्यी है प्रकृति किसी को माफ नहीं करे।

असीमित पाप होगें यदि प्रकृति पापी को माफ करे।। 927

जीवित शिकार को कैसे शेर चोंथ चोंथ कर खायें।

शिकार तड़फता रहे जग में उसे कोई नहीं बचायें।। 928

जो पीड़ा देता पीड़ा के बदले पीड़ा ही पायेगा।

जो आदमी आम लगावे वो आप फल ही पायेगा।। 929

समाधि समाधि अंतर एक असंभोग दूजी ईश मन लगाये।

संभोग की संतान ही समाधि से परमानंद को पाये।। 930

नीची इंद्रीयों में जो जन आनंद पाये नीच कहाये।

ब्रहारंध्र में ध्यान लगाये जो आनंद पाये उच्च आये।। 931

आनंद आनंद में अंतर एक नीचा दूजा ऊँचा आये।

उच्च आनंद से संभोग का सीधा संबंध समझ आये।। 932

असंभोग की संतान नीच संभोग की उच्च आनंद पाये।

उच्च आनंद मानव को स्वर्ग पहुँचाये मेरी समझ आये।। 933

मुद्रासन बैठ चोटी ध्यान लगाये परम आनंद को पाये।

जब शरीर शून्य हो जाये यही समाधि अवस्वा आये।। 934

पूर्ण समाधि में मानुष मन पूर्णब्रहा से मिल जाये।

आप होते अथवा नहीं होते समझ में नहीं आये।। 935

आप समाज को संभोग समाधि तज समाधि में लगायें।

समाज में न्याय लाकर धरा को स्वर्ग समान बनायें।। 936

समय आ गया समाधि लगा परमानंद पाने का भाई।

ऐआसी की वस्तु नहीं संतान देने बनी है लुगाई। 937

कवि का ना कोई फायदा ना कोई नुकसान आये।

मुझे शिकवा नहीं समाज संडास सड़े या स्वर्ग जाये।। 938

जिसे जो जचे वही करे कवि सबको दिया बताये।

सबका मुकद्दर सम नहीं सब समाधि नहीं लगा पायें।। 939

मानव मुकद्दर पिछले जन्मों का भी कर्म फल आये।

ध्यान समाधि से अब अगला जन्म अच्छा लें बनाये।। 940

आप जाने अभिलेखी आत्मा सदा साथ में रहते आयें।

आत्मा अगर अजर अमर अभिलेखी आत्मा साथ भी आयें। 520 अ

समाधिः— मन को ब्रम्हरंध्र पर केंद्रित करना, असमान।

ब्रम्हरंध्र :— सिर में चोटी के आस—पास (जहाँ भौरी होती है) स्थान होता है।

टीपः कुछ टंकन त्रुटियाँ 05/02/2023 को सुधारी गई।

''जो व्यक्ति त्याग नहीं कर सकते उनको शिक्षक नहीं बनना चाहिए क्योंकि त्याग शिक्षक की पहली योग्यता है''

डॉ. उमाशंकर पटेल

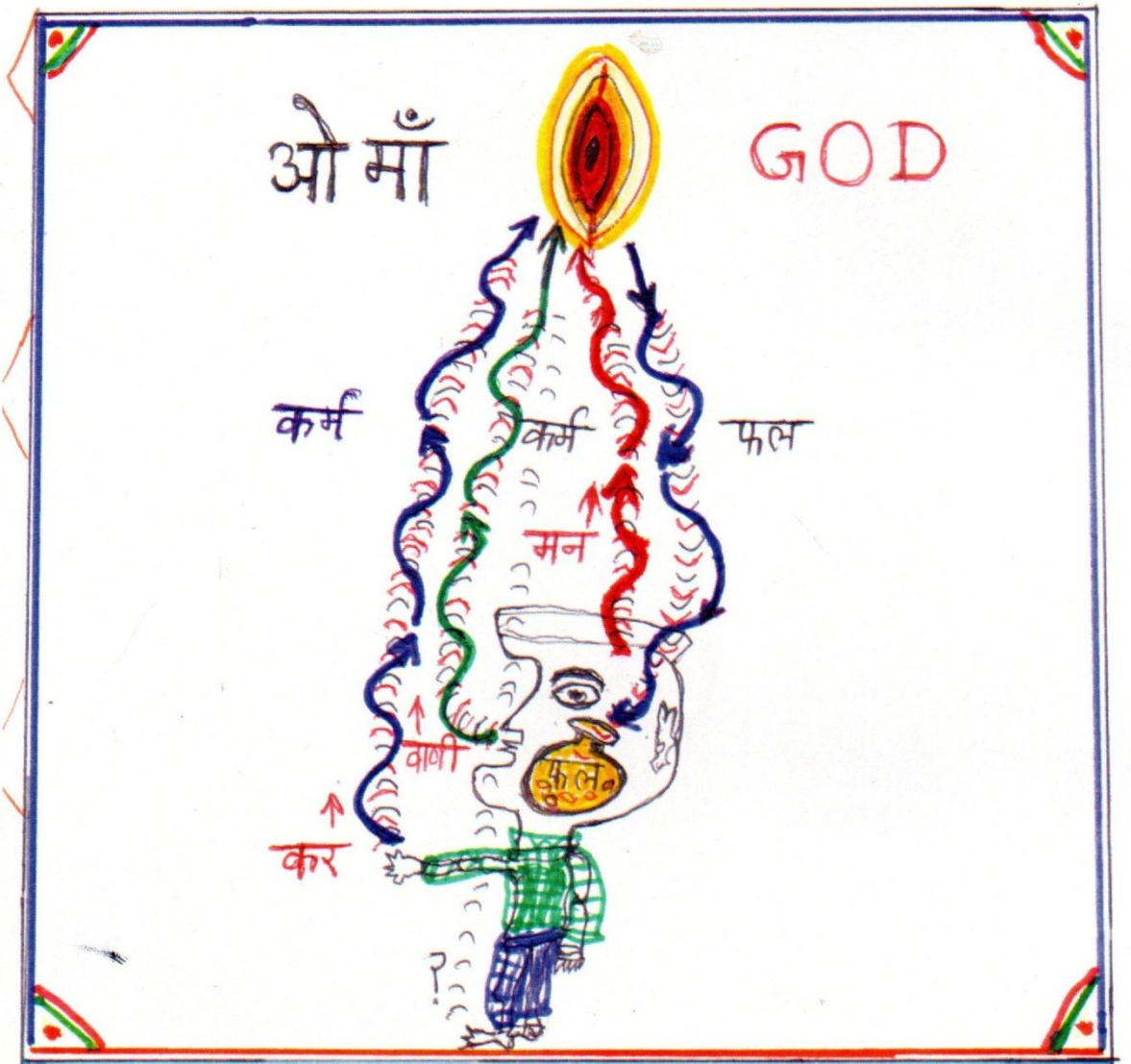

मैं किसी के ज्ञान का खण्डन नहीं करता।

उमाशंकर
25.9.22

God Father Print System
R.C. Complex DAMOH NAKA
JABALPUR M.P. INDIA/Bharat